अनुक्रमणिका

क्रम सं.	विषय	पृ. सं.
1.	श्री केसरीयाजी का चित्र	i
2.	नवकार मंत्र आचार्य–साधु भागवतों के संदेश	ii
3.	महासभा के अध्यक्ष महोदय का संदेश	iii
4.	महासभा के मंत्री महोदय का संदेश	iv
5.	संम्पादकीय, लेखक के विचार	v
6.	गणेकार मंत्र का चित्रण	viii
7.	माँ पद्मावती का चित्र	01
8.	णमोकार मंत्र की उत्पत्ति एवं महत्ता	03
	(अ) नमो पद का रहस्य	06
	(ब) नवकार मंत्र की महत्ता	08
	(स) नवकार मंत्र से योग	11
	(द) स्फटिक माला	13
	(य) नवकार मंत्र –संपदा	14
	(र) णमो नमस्कार मंत्र न भूतो न भविष्यति	16
	(ल) महामंगल श्री नवकार	21
	(व) नवकार मंत्र का मनोविज्ञान	23
	(स) नवग्रह एवं नमस्कार मंत्र	24
	(श) विभिन्न लिपियों में णमोकार मंत्र	25
	(ह) णमोकार मंत्र महामंत्र है, शक्तिशाली है ऐसा क्यों ?	28
09.	जैन धर्म का मूल ग्रंथ–आगम	30
10.	भारत की प्राचीन जैन गुफाऐं	47
11.	भारत की प्राचीन जैन गुफाओं की चित्रावली	51
12.	संदर्भित पुस्तकों की सूची	60
13.	लेखक का परिचय	61
14.	प्रभावी श्री पार्श्वनाथ भगवान का तीर्थ नांदगिरि	62
15.	जैन धर्म के प्राचीन तीर्थों की चित्रावली	65

णमोकार मंत्र (नवकार मंत्र) महामंत्र की उत्पत्ति एवं महत्ता

जैन धर्म का नवकार मंत्र एक महामंत्र है जिसके माध्यम से शक्ति व शांति की अनुभूति होती है। प्रश्न यह है कि यह महामंत्र कैसे है व कब उत्पन्न हुआ। यह सब जानने के लिए मंत्र की उत्पत्ति के बारे में जानना होगा।

नवकार एक मंत्राधिराज मंत्र है। इसे समझने के लिए जिस प्रकार बालक को प्रारम्भ से ही माता पिता को प्रणाम करना सिखाया जाता है अर्थात् उसमें संस्कार का बीजारोपण किया जाता है उसी प्रकार इहलोक– परलोक के लिए प्रथम नमस्कार ही धर्म है। जब तक हम पूर्ण ज्ञानी नहीं बनते तब तक पूर्ण ज्ञानियों को, उनके स्वरूप को तथा उनके उपदेश को समझने के लिए ज्ञानी गुरू का आश्रय लेना होगा।

नवकार मंत्र अनादि है जिस प्रकार जैन धर्म की उत्पत्ति अनादिकाल से है, वैसे ही नवकार मंत्र भी अनादिकाल से हैं। इसके लिए अनेक विद्वानों ने भी यही मत व्यक्त किये है।

इतिहास/शास्त्र के आधार पर विवेचना करें तो भगवती सूत्र में भी यह मंत्र उपलब्ध है।

खारवेल के शिलालेख (ई.पू. 1 5 2 वर्ष पूर्व) पर इस मंत्र के दो पद उत्कीर्ण है ।

लार्ड मेकाले, विन्सेन्ट स्मिथ, आनन्दकुमार स्वामी, केपी, जायसवाल आरूसी मजमूदार आदि विद्वानों ने अपने–अपने मत का प्रतिपादन अपनी–अपनी पुस्तकों में किया है जिसके आधार पर नवकार मंत्र अनादिकाल से है।

नवकार मंत्र महामंत्र है। जिसे जानने के लिए एक उदाहरण को समझना होगा – 'अचिन्त्यों हि मणि मंत्र औषधीनां प्रभावः' अर्थात् मणि मंत्र व औषधि का प्रभाव अचिन्त्य होता है। अतः यह आवश्यक है कि मणि मंत्र व औषधि सही हो तो उसका प्रभाव भी सही होता है। यदि मणि को सही समय और विधि से धारण किया जाए तो उसको पहनने से तत्काल प्रभाव पडता है। इसी प्रकार मंत्र भी साधना करने वाले की पात्रता, खानपान, रहन–सहन, शुद्ध होना व उचित समय पर विधि द्वारा पढ़ा जाए तो उसका प्रभाव तत्काल होता है और औषधि भी समय पर विधिपूर्वक ली जाए तो ही प्रभाव होता है।

हम नवकार मंत्र के बारे में विवेचना कर रहे है – 'आवश्यकता ही आविष्कारकी जननी है'। मनुष्य की आवश्यकतानुसार नवीन प्रयोग, विद्या, मंत्रों की उत्पत्ति होती है। भगवान महावीर के कथनानुसार : अहो दुक्खों हूँ संसारों जत्थ की संति जंतयो' अर्थात यह संसार अतिदुखमय है। इन सभी दुखों को दूर करने के लिए मंत्र विज्ञान की उत्पत्ति हुई और जैन धर्म में नवकार मंत्र प्रतिपादित हुआ।

चमत्कार को नमस्कार किया जाता है इसके लिए गणि महोदयसागर जी महाराज सा. द्वारा लिखित पुस्तक 'बहुरत्ना वसुन्धरा' मे दिये गये उदाहरण इतने पर्याप्त हैं जो नवकार मंत्र के चमत्कार के प्रभाव को दर्शाता है। मंत्र का आराधक चाहे जैन हो, अजैन हो, मुस्लिम हो जिनका नाम पता आदि दिये हैं और यह भी स्पष्ट किया है कि उन्होंने इस मंत्र का किस प्रकार से प्रयोग कर अन्यों को लाभान्वित किया है। इन सबका उल्लेख यहाँ करना कठिन है। इसके साथ–साथ आचार्य देव श्री पूर्णचन्द्र सूरीश्वर जी द्वारा लिखित पुस्तक में भी कई चमत्कारों का वर्णन है।

इस मंत्र को पंच परमेष्टि मंत्र भी कहा गया है।

1. अरिहन्तों को नमस्कार।
2. सिद्धों को नमस्कार।
3. आचार्यों को नमस्कार।
4. उपाध्यायों को नमस्कार।
5. सभी साधुओं को नमस्कार।

शास्त्रों के अनुसार अरिहन्त के 12 गुण होते हैं। सिद्धों के 8 गुण होते है, आचार्यों के 36 गुण होते हैं, उपाध्याय के 25 व साधु के 27 गुण होते हैं। इस प्रकार पंच परमेष्ठी के 108 गुण होते हैं। दिगम्बर परम्परा में 143 गुण होते हैं।

इस मंत्र का स्मरण व चिन्तन करने पर हमको आत्मिक व मानसिक शांति प्राप्त होती है। इस मंत्र में समस्त वे शक्तियाँ विद्यमान है जो सभी प्रकार की इच्छाओं और कार्य सिद्धि में समर्थ हैं। यह मनुष्य की सभी प्रकार की इच्छाओं को पूर्ण करता है। यह आध्यात्मिक मंत्र होते हुए भी प्रमुख रूप से सांसारिक फल भी देते है। इसके अतिरिक्त भी निम्न अन्य महत्वपूर्ण तथ्य है जो महामंत्र की महत्ता एवं सार्थकता को स्थापित करता है।

1. मंत्र प्रतीकात्मक है।
2. उद्धात गुणों की प्रधानता रखता है।

3. इसमें किसी प्रकार की कामना नहीं है।
4. इसमे विनय भावना परिपूर्ण है।
5. इसको बोलने–स्मरण करने पर ऊर्जा अधिक गतिशील होती है। जीवन में शक्ति का संचार होना आवश्यक है।

1. प्रतीकात्मक – णमोकार मंत्र में वन्दन करने के लिए पंच परमेष्ठी व्यक्ति न होकर गुण प्रतीक है। प्रतीक उसे कहा जाता है जो किसी विशिष्टता से परिपूर्ण हो, यह भावनाओं में भी प्रेरणा प्रदान करता हो। इस मंत्र द्वारा स्व–कल्याण होता है तथा अन्यों के लिए भी आत्म कल्याण का प्रेरणा स्वरूप है, अतः इसको कल्याणकारी कहा गया है।
2. गुणी व गुणीजन की प्रमुखता है। यह मंत्र किसी भी देव/देवी/ज्योतिष को समर्पित नहीं है और न ही इसका उल्लेख है। इसका प्रभाव यह होता है कि इसका स्मरण करना, बोलना सामान्य व सरल क्रिया है।
3. कामना का अभाव – इस मंत्र को बोलने व स्मरण करने पर किसी प्रकार की इच्छा प्रकट नहीं होती है और न ही आराधक कोई इच्छा ही प्रकट करता है क्योंकि इस मंत्र में इच्छा का भाव ही नहीं है।
4. विनय भावना का होना– किसी भी धर्म का प्रमुख सार विनय होता है। इस मंत्र में प्रथम या प्रारम्भ ही 'नमो' से होता है। नमो शब्द से नमन, वन्दन, नमस्कार आदि प्रकट होते है।
5. ऊर्जा–शक्ति का संचार होता है। यह मंत्र संसार के अन्य मंत्रों से पृथक व प्रभावशाली है। इसके बोलने मात्र से ही प्राणों मे शक्ति का संचार और ऊर्जा का प्रवाह तीव्र हो जाता है। नमों की अपेक्षा णमो अधिक प्रभावशाली है। प्रथम 'ण' व अन्तिम ण के संयोग से इसकी ध्वनि में विस्फोट अधिक तीव्र हो जाता है।

आचार्य श्री सोमदेवसूरि का मत यह है 'णमोकार मंत्र के पांचों पदो का उच्चारण तीन श्वास में करना चाहिए। प्रथम श्वास में मंत्र के प्रथम दो पद, द्वितीय श्वास में तीसरे व चौथे पद का एवं तृतीय श्वास में अन्तिम पद/आचार्य के मत के अनुसार 'ण' व (न) का संयुक्त तथा एक साथ धारा में उच्चारण अभिष्ट है।

अन्त में यह कहना उचित होगा कि नवकार मंत्र के बोलने से मलिन व मिथ्या विचारों का स्वतः त्याग हो जाता है और शुभ भावों का संचरण हेाता है। हाँ यह अवश्य है कि आराधक के मन में भावों में, विचारों में मंत्र के प्रति श्रद्धा होनी चाहिए।

इस मंत्र के जपने से अपने अशुभ कर्मों की निर्जरा (बंधे हुए कर्मों का पृथकीकरण) होती है और शुभ कर्मो का संचार होता है, इसलिए यह आध्यात्मिक मंत्र है। नवकार महामंत्र का प्रभाव व महिमा अपार है इस मंत्र में 14 पूर्व का सार है।

निष्कर्ष में यह कहा जा सकता है कि नवकार मंत्र की महत्ता व प्रभाव इतना है कि इस महत्व की व्याख्या करने में यदि पृथ्वी–आकाश मिलकर कागज बन जाए और सभी समुद्र के पानी जितनी स्याही बन जाए तो भी कम पड़ जायेगी।

सात समंद की मसि करूं, लेखनी सब बन राई।
धरती सब कागद करूं, हरिगुन लिख्या न जाई।।

नमो पद का रहस्य

'नमो मे नम्रता है, विनय है, विवेक है तथा वैराग्य भी है, तप, स्वाध्याय तथा ईश्वर भक्ति भी है, साथ ही दुष्कृत की गर्हा, सुकृत की अनुमोदना तथा श्री अरिहंतादि की शरण भी है।

नमन करना अर्थात् मात्र मस्तक को झुकाना ही नहीं पर मन को, मन के विचारों को, मन की इच्छाओं को तथा मन की तृष्णाओं को भी नमित करना अर्थात् उनको तुच्छ गिनना है। मात्र हाथ जोडना ही नहीं पर अन्तःकरण में एकता–अभेद की भावना करनी चाहिए।

नम्रता का अर्थ है अहंभाव का सम्पूर्ण नाश तथा बाह्य विषयों मे अपने अहंत्व की बुद्धि का सर्वथा विलय।

समुद्र में रहने वाली बूँद समुद्र की महत्ता बढ़ती है। समुद्र से अलग होकर जब वह अपनेपन का दावा करने जाती है तब वह तुरन्त सूख जाती है उसका अस्तित्व मिट जाता है। 'नमो' पद में गुप्त रहस्य क्या है यह इसी से प्रकट होता है।

नमस्कार से दर्शन की शुद्धि होती है अर्थात् कर्मकृत अपनी हीनता, लघुता या तुच्छता का दर्शन होता है तथा परमात्मतत्व की उच्चता, महत्ता तथा भव्यता का भाव होता है जिससे अहंभाव का फोडा फूट जाता है और ममताभाव का मवाद निकल जाता है परिणामस्वरूप जीव को परम शांति का अनुभव होता है।

एकाग्रता से अर्थविचार सहित जप करने वाले के समस्त कष्ट दूर होते है।

'मननात् त्रायते यस्मात् तस्मानमंत्र प्रकीर्तित'
जिसके मनन से रक्षा होती है, वह मंत्र है।

मनन अर्थात् चिन्तन मन का धर्म है मन का लय होने से चिन्ताराशि का त्याग होता है।चिन्ताराशि के त्याग से निश्चतता रूपी समाधि प्राप्त होती है।

मन जब सभी विषयों की चिन्ता से रहित होता है तथा आत्मतत्व में विलीन होता है तब वह समाधि प्राप्त करता है। नवकार के प्रथम दो पदों मे मुख्य रूप से सामर्थ्ययोग को नमस्कार है क्योंकि श्री अरिहंत तथा सिद्धों में अनन्त सामर्थ्य–वीर्य प्रकट हुआ है। बाद के तीन पदों मे प्रधान रूप से शास्त्रयोग को नमस्कार किया है क्योकि आचार्य, उपाध्याय तथा साधु में वचनानुष्ठान निहित है। अन्तिम चार पदों में इच्छायोग को नमस्कार है क्योंकि उसमें नमस्कार का फल वर्णित है फल श्रवण से नमस्कार में प्रवृत्त होने की इच्छा होती है।

श्री नवपदों में स्थित भिन्न–भिन्नप्रकार का नमस्कार यदि ध्यान मे रखकर किया जाय तो वह तुरन्त सजीव एवं प्राणवान् बनता है।

ज्ञानपूर्वक, श्रद्धापूर्वक एवं लक्ष्यपूर्वक प्रमाद छोडकर यदि नमस्कार महामंत्र का आराधन किया जाय तो वह अचिन्त्य चिन्तामणि एवं अपूर्व कल्पवृक्ष के समान फलप्रद बनता है।

चिरकाल का तप बहुत ही श्रुत एवं उत्कृष्ट चारित्र सम्पन्न भी हो तो भी यदि भक्ति शून्य हो तो वे अहंकार के पोशक बन अधोगति का सृजन करते हैं। भक्ति का उदय होने से वे सब कृतकृत्य होते हैं। मंत्र के ध्यान से एवं जप से बार–बार प्रभु के नाम का एवं मंत्र का पाठ करने से चित्त में भक्ति स्फूरित होती है।

बाह्य पदार्थ बाह्य क्रिया की अपेक्षा रखते हैं परन्तु सूक्ष्मतम तथा जीव मात्र में सत्ता रूप में विराजमान परमात्मा की प्राप्ति, विवेक विचार, ज्ञान तथा भक्ति रूपी अन्तरंग साधनों से होती है।

स्नेह रूपी तेल से भरित ज्ञानदीप मनमन्दिर में प्रकट करने से देहमन्दिर में विराजमान अन्तर्यामी परमात्मा के दर्शन होते हैं । अतः दीर्घकाल पर्यन्त आदर सहित सतत अभ्यास की आवश्यकता है ।

वह अभ्यास मन्त्र के जाप द्वारा तथा उसके अर्थ की कल्पना द्वारा किया जा सकता है। इस प्रकार श्री नवकारमंत्र उसकी अर्थभावना सहित जब आराधित होता है तब वह अवश्य भक्तिवर्द्धक बनता है तथा बढी हुई भक्ति मुक्ति के समीपवर्तिनी हो जाती है।

नवकार मंत्र की महत्ता

श्री जैन शासन का महान् आद्य सूत्ररूप एवं प्रथम स्मरणरूप, सकल आगम उपनिषद रहस्यरूप, समस्त मन्त्रों में शिरोमणी परमोच्य पँचपरमेष्टि निवास अनन्तगुण भण्डार, सर्वोत्तम आंलबन, नवनिधि और अष्टसिद्धि दातार, निखिल मनोवाँछित पूरक, सर्व पाप विनाशक, समग्र उपद्रव उपसर्ग निवारक, महाश्रुतस्कन्ध, भावमंगल, अनन्त अर्थ प्रकाशक एवं स्वर्ग दायक, ऐसा ''श्री नमस्कार महामंत्र'' स्वर्ग–मृत्यु–पाताल इन तीनों लोक में अर्हिनिश स्मरणीय, चिन्तनीय, मननीय, पूजनीय, नमनकरणीय एवं वन्दनीय है।

चिन्तामणी कल्पतरू, कामघट एवम् कामधेनु से भी अधिक फलदायी ऐसा शाश्वत महामंत्र नवकार से जो मांगोगे वह जरूर मिलेगा।

1. संसार में सुखी होना हो तो सुमरो महा मंत्र नवकार
2. सकल दुख को सर्वथा दूर करना हो तो सुमरो महा मंत्र नवकार
3. समस्त पाप का विनाश करना हो तो सुमरो महा मंत्र नवकार
4. अधःपतन के, गहरे गर्त में न पडना हो तो सुमरो महा मंत्र नवकार
5. आत्मा का सर्वांग सम्पूर्ण विकास साधना हो तो सुमरो महा मंत्र नवकार।
6. मनोवांछित सर्ववस्तु प्राप्त करनी हो तो सुमरो महा मंत्र नवकार।
7. स्वर्ग के दिव्य सुखों को पाना हो तो सुमरो महा मंत्र नवकार।
8. तीर्थंकर, इन्द्र, चक्रवर्ती, बलदेव, वासुदेव, और प्रतिवासुदेव की ऋद्धि सिद्धि लेनी हो तो सुमरो महा मंत्र नवकार।
9. आत्मा का बाह्य और अभ्यन्तर उभय शत्रुओं को जीतना हो तो सुमरो महा मंत्र नवकार।
10. नरक गति और क्रिर्यन्चगति के द्वार बन्द करने हो तो सुमरो महा मंत्र नवकार।
11. आत्मा और मन की शांति प्राप्त करनी हो तो सुमरो महा मंत्र नवकार
12. श्री पंचपरमेष्ठि भगवन्तों को अपने हृदय मे विराजमान करना हो तो सुमरो महा मंत्र नवकार।

13. श्री पंचपरमेष्ठि भगवन्तों का जाप जपना हो अथवा उनका ध्यान धरना हो तो सुमरो महा मंत्र नवकार

14. अन्तःकरण में अचल श्रद्धा प्रकट करनी हो तो सुमरो महा मन्त्र नवकार

15. आत्मा के असंख्यात प्रदेश तथा रोम–रोम में पवित्रता का प्रकाश प्रकट करना हो तो सुमरो महा मन्त्र नवकार।

16. अशान्त वातावरण को हटाना हो और शान्त वातावरण पैदा करना हो तो सुमरो महा मन्त्र नवकार।

17. यश और कीर्ति को प्राप्त करना हो और उसे व्यापक करना हो तो सुमरो महा मन्त्र नवकार।

18. सर्प और बिच्छु वगैरह अन्य जहरीले जीव जन्तुओं से देह का जहर उतारना हो तो महा सुमरो मन्त्र नवकार।

19. आई हुई और आने वाली आधि व्याधि और उपाधि को टालना हो तो सुमरो महा मन्त्र नवकार।

20. भूत, पिशाच, व्यन्तर, जिन, डाकिनी, शाकिनी, याकिनी का विकार तथा उनका भय दूर करना हो तो सुमरो महा मन्त्र नवकार।

21. सभी प्रकार की आपत्ति, विपत्ति किसी भी प्रकार के संकट को हटाना हो तो सुमरो महा मन्त्र नवकार।

22. अणिमादि सिद्धियाँ प्राप्त करनी हो तो सुमरो महा मन्त्र नवकार।

23. कैसे भी असाध्य रोगों को दूर करना हो, और निरोग रहना हो तो सुमरो महा मन्त्र नवकार।

24. धार्मिक, व्यवहारिक किसी भी प्रकार का कार्य करना हो तो प्रथम सुमरो महा मन्त्र नवकार।

25. सवेरे उठते, रात्रि को सोते, बैठते, उठते, हलते, चलते, खाते पीते कोई भी कार्य करते हुए सुमरो महा मन्त्र नवकार।

26. दर्शन, ज्ञान, चारित्र रत्नत्रयी की सुन्दर आराधना करनी हो तो सुमरो महा मन्त्र नवकार।

27. दुर्ध्यान, कुत्सित संकल्प, विकल्प आदि से बचना हो तो सुमरो महा मन्त्र नवकार।

28. सच्चा सुख प्राप्त करना हो तो सुमरो महा मन्त्र नवकार।
29. यह महामन्त्र घर के सभी झगड़े –कलह को शांत करता है।
30. चौदह पूर्व का साररूप सुधा का पान करना हो तो सुमरो महा मन्त्र नवकार।
31. सकल रहस्य को जानना हो तो सुमरो महा मन्त्र नवकार।
32. नव निधि प्राप्त करनी हो तो सुमरो महा मन्त्र नवकार।
33. सर्वोत्तम मंगल कार्य करना हो तो सुमरो महा मन्त्र नवकार।
34. किसी भी प्रकार का अधिकार या पद की चाह हो तो सुमरो महा मन्त्र नवकार।
35. भाग्य को अजमाना हो तो सुमरो महा मन्त्र नवकार।
36. बुद्धि को तीव्र करना हो तो सुमरो महा मन्त्र नवकार।
37. किसी भी प्रकार के जीवन का मनोरथ पूर्ण करना हो तो सुमरो महा मन्त्र नवकार।
38. पाँचो इन्द्रियों की (त्वचा, जीभ, नाक, कान और आँख) सुन्दरता प्राप्त करनी हो या काबू में लेना हो तो सुमरो महा मन्त्र नवकार।
39. सिंह, बाघ, वराह इत्यादि हिंसक प्राणियों के भय से व चोर, डाकू के भय से और अग्नि जल, पवन, वगैरह के भय से बचना हो तो सुमरो महा मन्त्र नवकार।
40. किसी भी प्रकार का आकर्षण या वशीकरण करना हो तो सुमरो महा मन्त्र नवकार।
41. भव–भ्रमण चौरासी का फेरा, जन्म और मरण इत्यादि को हमेशा के लिए तिलांजलि देनी हो, संयम की सुन्दर आराधना करनी हो तो और मोक्ष नगरी में जाना हो तो सुमरो महा मन्त्र नवकार।
42. इस भव और परभव दोनों में सुखी होना हो तो सुमरो महा मन्त्र नवकार।
43. मृत्यु की अन्तिम घडी सुधारनी हो, समाधि पूर्वक मृत्यु प्राप्त करनी हो तो सुमरो महा मन्त्र नवकार।
44. परलोक में सद्गति प्राप्त करनी हो तो सुमरो महा मन्त्र नवकार।

45. उत्तम मनुष्य भव, आर्यक्षेत्र, आर्यकुल, आर्य जाति सर्वांगपूर्ण पंचेन्द्रिय, जैन धर्म, जिनवाणी, धर्म, श्रद्धा, संयम में पराक्रम, अनन्त शक्ति वगैरह पुनः पुनः प्राप्त करनी हो तो सुमरो महा मन्त्र नवकार।

46. किसी भी कार्य में विजय प्राप्त करनी हो तो सुमरो महा मन्त्र नवकार।

47. असाध्य को साध्य करना, अमंगल को मंगल रूप करना, अनिष्ठ को इष्ट करना हो तो सुमरो महा मन्त्र नवकार।

48. धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष चाहते हो तो सुमरो महा मन्त्र नवकार।

49. साधित अनन्त स्थिति रूप सदा शास्वत सुख चाहते हो ता सुमरो महा मन्त्र नवकार।

50. चित्त से चिंतन वचन से वांच्छित काया से प्रारम्भ किया हुआ, काम तभी संभव होगा जब नवकार महा मंत्र का स्मरण किया जायेगा।

51. श्री नवकार मंत्र का जाप काम वासनाओं का नाश कर सभी कामनाएँ पूर्ण करता है।

''नवकार मंत्र से योग''

''परम शुद्ध आत्माओं को नमन''

प्रत्येक आत्मा का जीवन प्रमाद रहित विवेकपूर्ण है।

(भगवान् महावीर)

आत्म कल्याण व निरोग रहने हेतु, प्राणायाम व योग के महत्वपूर्ण बिन्दु है। इन्हें शरीर की शक्ति सामर्थ्य, विषय को गम्भीरता साध्य व असाध्य के अनुसार करने का प्रयत्न अपेक्षित है।

1. नवकार मंत्र जाप या कोई भी मंत्र जाप करते समय, जितने समय तक श्वांस रोक सकें रोकें। योग करते हुए नवकार मंत्र गिनते रहें।

2. हाथ की अंगुलियों के प्रत्येक पौरे व हथेली की खाली जगह पर अंगुठे का पूरा दबाव देकर नवकार मंत्र सांस रोककर गिने इससे आत्मा व शरीर दोनों को लाभ होगा, यह एक्यूप्रेषर विधि हैं। जब तक आत्म स्वीकृती हो अवश्य करें।

3. उपर्युक्त दोनों विधि या बिन्दु से हाई ब्लड प्रेशर हृदय व मस्तिष्क रोग में लाभ होगा, निरंतर प्रतिदिन करिये धीरे धीरे लाभ होगा व नियमित करने से दवाइयाँ छूट जायेंगी।

4. आँख की कमजोरियों, दृष्टि की कमी को दूर करने के लिए प्रतिदिन आँख की पुतलियों को चारों दिशाओं मे 100 बार घुमायें निरन्तर करने से अवश्य लाभ होगा, संभवत, चश्मा भी छूट सकता है। जहां तक हो काला चश्मा न लगाये इससे आँखों की मूल शक्ति कमजोर होती है, आँख दुखने या धूप सहन न हो सकने पर ही उपयोग में लेवें।

5. गले की व्याधियों के लिए, पूरी जीभ बाहर निकालकर, सांस बाहर फेंकिये। गले की खराश कर्कश ध्वनी की अस्पष्टता दूर होगी, लगभग एक बार अवश्य करिये । क्रमशः नित्य करने से अवश्य लाभ मिलेगा।

6. हृदय व फेफडों के लिए बैठे बैठे ही हाथों को आगे पीछे दाये बाये 100 बार घुमाये नियमित करने से कॉलेस्ट्रोल नहीं जमेगा व दोनो अंग स्वस्थ्य रहेंगे, इससे आत्म कल्याण में मदद मिलेगी, साथ ही एक नाक को बंदकर दूसरे से सांस बाहर निकाले ऐसा 100 बार करें।

7. पेट सम्बन्धी जटिल व सामान्य रोगों के लिए निम्न उपाय है पेट के रोगों के कारण ही जीवन की अनेकों समस्याए आती हैं व अनेक रोग पनपते हैं, बैठे–बैठे पैर लम्बे करके हाथों को लम्बा करके हाथ चक्की घुमाने की तरह उल्टा सीधा 100 बार घुमाए व सोते सोते हथेली टेक कर छाती के ऊपर का हिस्सा पूरा उठाने का प्रयत्न करें। 100 बार करे।

8. घुटने के बल बैठकर दोनों हाथ की मुठिठ् पेट पर रखकर, 100 बार आधे शरीर को नीचे की तरफ झुकाये बाद में हथेलियों को रखकर झुकाये 100 बार।

9. कोहनियों को हाथ के सहारे जमीन पर टिकाकर 100 बार पूरे शरीर को जमीन तक झुकाइये।

10. बिस्तर पर सोकर एक एक पैर को प्रथम दांए फिर बाए और फिर दोनों पैर के दाएं तथा बाएँ पूरा घुमाये 100 बार प्रत्येक क्रिया करने के साथ विश्राम के साथ 100 बार नाक से सांस को सिर्फ बाहर छोडिये।

11. सोते हुए दोनों घुटनों को पेट की तरफ दबाइये व साँस भी इसके बाद 100 बार बाहर निकाले।

12. सोते–सोते 100 बार दोनों पैरो को साईकिल चलाने की तरह घुमायें इसके बाद 100 बार साँस बाहर छोड़ें।

13. पैर के घुटने के दर्द को दूर करने के लिये बिस्तर या जमीन पर लेटकर घुटनों को ढीला छोड़ने व कड़ा करें 100 बार व घुटनों को लम्बा कर पैरों को पूरा मोड़े 100 बार 90 डिग्री के कोण में।

उक्त सभी यौगिक आसन करते समय नवकार महामंत्र का जाप मन में शुद्ध चित्त से कर सकते हैं तथा श्वसन पर ध्यान देते हुए भी मन्त्रोचार लाभदायक है। यदि पूरा मंत्र न गिन सके तो एक ही पद का जाप करें तो यह योगिक आसन आपको ज्यादा लाभकारी होगा।

स्फटिक माला

(CRYSTAL NECKLACE) एवं नवकार मंत्र

यह आपकी शक्तिको बढ़ाकर रोग प्रतिरोधक प्रणाली को पुष्ट करती है और आपके सभी ऊर्जा चक्रों को सन्तुलित करती है। इलेक्ट्रिक और इलेक्ट्रोनिक उपकरणों से (टी.वी, कम्प्यूटर, फोटो कॉपीयर्स, ट्यूब लाइट्स आदि) निकलने वाले चुम्बकीय प्रभावों से बचाती है। इसमें डाली गई विशेष प्रार्थना आपके तनावों को कम करती है। मानसिक जागरूकता एवं रचनात्मकता को बढ़ाती है।

कुछ उपयोग निम्न है :–

– भूचक्र या ह्रदय चक्र पर 20–30 मिनट रख कर तनाव कम करें।

– दर्द वाली जगह पर या मांसपेशी के खिंचाव वाले स्थान पर रखकर माला को हथेली से ढ़क कर 15–30 मिनट तक करें और इसकी शक्तिको पीड़ित अंग में समाने की कल्पना करें।

– माला को अपने दाएं हाथ में पकड़ें और तकलीफ वाले स्थान पर रखें। नवकार मंत्र बोले (तीन बार)

''मैं अपने अन्तर में ईश्वरीय प्रकाश का आवाहन करता हूँ। मैं एक पूर्ण एवं पवित्र माध्यम हूँ, प्रकाश मेरा मार्गदर्शक है।'' कुछ ही क्षणो में आपका बाँया हाथ गरम हो जायगा और दाँया हाथ तथा माला ठंडी हो जाएगी। कुछ ही क्षणो में आपका दाँया हाथ और धीरे–धीरे माला गरम होने लगेंगे और बाँए हाथ जितने गरम हो जाऐगे। जब दोनो हाथ ठंडे हो जाऐ तो समझे उपचार चक्र पूरा हुआ। अब दर्द या तनाव की कमी को परखें, आपको सफलता मिले तो जब–जब जरूरत समझें दुहराते रहे।

– तत्काल ऊर्जावान बनने के लिए अपनी माला को 5 मिनट के लिए दांई किडनी पर रखें और 5 मिनट के लिए ही बांई पर। आप स्फूर्तिवान हो जाएंगें।

– तीन–तीन मिनट के लिए प्रत्येक भौंह के ऊपर मध्य में तथा प्रत्येक आँख के नीचे गाल की हड्डी पर रखने से बन्द साइनस खुल जाती है। साइनुसाइटिस के रोगी लाभ उठावें।

नवकार मंत्र–संपदा

जस्स मणे नमुक्कारो, संसारो तस्स कि कुणई ?

अर्थात् : जिसके हृदय में नवकार बसा हो, उसका संसार में कोई कुछ नहीं बिगाड सकता। चौदह पूर्व के सारभूत नमस्कार महामंत्र की महिमा का बखान किसी भी कलम–स्याही या कागज पर संभव नहीं है। परन्तु इसके प्रभाव की महिमा से भरे जैन शासन में अनेकानेक प्रतिभाएं अपने जीवन में इसका अनुभव कर चुकी हैं। आईये, थोडा–सा स्पर्श करें, इस महामंत्र की महिमा से भरी संपदा के भंडार का।

अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय एवं साधुओं की भाववंदना जैन जगत की अनादिकालीन, अनुपम शाश्वत देन है। जिसे जन्म–जीवन एवं मरणवेला में इस मंत्र का ध्यान रहा, उसका जीवन सहज कल्याणमय बन गया।

गरीब ब्राह्मण ऋषभदत्त के पुत्र अमरकुमार का वध होने वाला ही था कि उसे तत्क्षण कभी जैन साधु के श्रीमुख से सुना नमस्कार महामंत्र याद आ गया और देवी शक्ति से उसकी सूली मिटकर राज–सिंहासन बनवाकर उसे बिठा दिया।

जिसके प्रत्येक अक्षर में 1008 विद्याएं निवास करती हैं। इसके ध्वनित स्वरों में औषधियां भरी हैं। चित्रकार चित्रांगद की पुत्री ने अपने बीमार पिता को नमस्कार मंत्र सुनाया फलस्वरूप आत्मा देव रूप में उपजी।

मांस भक्षी गिद्ध भी इसकी शरण पाकर परलोक में महेन्द्र देवलोक में पहुंच गया। सीता के हरण समय यह पक्षी रावण के ऊपर प्रहार करते हुए सीता की रक्षा के लिए भागा था, लेकिन बेचारा लहुलुहान मूर्छित हो गया। श्रीराम ने उसका हाल देखकर तत्क्षण महामंत्र नवकार सुनाया। गिद्ध की आत्मा देवलोक पहुँची। शिकारी ने चील का शिकार किया घायल चील ने साधु मुख से नवकार सुनते – सुनते मरकर महाराणा की पुत्री बनी।

किसी भी शुभकार्य में शुभारंभ पूर्व इस मंत्र का मनन संकल्प शुद्धि के साथ किया जाता है। इतिहास के मणिरत्न जैसे माणिकचंद सेठ सिद्धगिरि की यात्रा में इस मंत्र को निरन्तर मुख में रखते थे, जिसके प्रभाव से आकस्मिक मृत्यु भी उन्हें यक्षेन्द्र मणिभद्र बना गई।

नमस्कार महामंत्र के पांचो पदों से पंच परमेष्ठि की वंदना वास्तव में भव वंदना है। मनुष्य भव में आत्मसात् किया नवकार समस्त दुखी भवों से निकलकर मनुष्य एवं देवगति की परम्परा के साथ अंत में पंचमी गति परमकल्याणक की प्राप्ति करवाने में समर्थ है। तेवीसवें तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ ने जलते नाग का उद्धार करने के लिए अंत समय में नवकार सुनाया परिणाम स्वरूप वे ही नाग धरणेन्द्र इन्द्र बनकर आज भी शासनोपकार कर रहे है। श्रमणोपासक सेठ के सानिध्य में रहे बैल अंतसमय नवकार श्रवण करके कंबल – शंबलदेव बने और प्रभु वीर को गंगा नदी पार करते हुए देवताओं से मिल कर उपसर्गों से मुक्त करवाया।

सव्व पावप्पणासणो

मेरे सभी पापों का नाश इस भाव वंदना से होगा। सर्व पाप विनाशक नवकार में सव्वपावप्पणासणों कहते ही यह मांग पूरी हो जाती है कि मेरे कर्मों का क्षय हो। वास्तव में दुःख पाप की संतान है, अगर पाप के पिता का ही जन्म न हो तो दुःख जन्म ही कैसे लेगा। नवकार ऐसे दुःखो का जन्म लेने से रोकता है।

कलिकाल सर्वज्ञ श्री हेमचन्द्राचार्य गुरूवर्य ने माता साध्वी के कालधर्म पश्चात् उनके उपकार को समर्पित एवं स्व कल्याण हेतु एक करोड नवकार का संकल्प पूर्ण किया था। चौदह पूर्वी भी अंत समय में श्रुत का विस्मरण होने पर नवकार की ही शरण लेते हैं।

अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय एवं साधुगणों की भाववंदना का यह मूल मंत्र जैन जगत् को प्राप्त अनादिकालीन शाश्वत देन है। असार दिखलाई देते संसार में नवकार नवनीत के समान है। इसलिए जिसे भी यह मंत्र जन्म–जीवन एवं मृत्यु की वेला में प्राप्त हो गया, उसका कल्याण ही हुआ है। अभय कुमार की कथा में इस मंत्र शक्ति का उल्लेख वंदनीय है।

णमो लोए सव्वसाहूणं

इसके प्रथम पांचों पदों में अंतिम पदों में अंतिम पांचवे पद में इस लोक में स्थित सामान्य से लेकर केवली साधुओं तक के समस्त मुनिवृदों की वंदना की गई है। भाव –समुच्च्यता का इससे बड़ा गुण समुच्चय विश्व की किसी भाषा में नहीं है। भाषा, भाव एवं भक्तिस्वरूप यह मंत्र भव–भव की भटकन से मुक्त कराने वाला रामबाण उपाय है।

णमो नमस्कार मंत्र न भूतो न भविष्यति :–

'न भूतो न भविष्यति' इस कहावत का अर्थ सिर्फ मंत्र के लिए ही उदाहरण स्वरूप ही दिया जा सकता है। अनेक वस्तुएं बनेगी, बिगडेगी। अनेक कीर्तिमान बनेंगे। एक से बढकर एक उदाहरण इस सृष्टि पर हुए हैं, होते रहे हैं, होते रहेंगे, परन्तु जिसके पीछे कुछ बना नहीं, आज नहीं बन रहा है, और भविष्य में कभी बनेगा भी नहीं। अर्थात् नवकार मंत्र जैसा कोई मंत्र कभी बना नहीं, आज बन सकता नही, भविष्य में निश्चित रूप से कभी बनेगा भी नहीं।

इस मंत्र की महिमा जितनी खोजे उतनी कम है। देखिए कितना रोचक अक्षर विश्व इसमें समाया है।

अक्षर	अंक	निर्देश
म	9 बार	5 महाव्रत + मंगल चतुष्ठ – 9 मिलते है।
र	3 बार	दर्शन, ज्ञान, चारित्र रूपी रत्नत्रयी की प्राप्ति होती है।
ह	3 बार	अभ्यंतर तीन दोशों का हनन होता है।
स	8 बार	8 प्रकार की सिद्धियां प्राप्त होती है।
य	3 बार	मन, वचन, काया वश होते है।
व	5 बार	पंचाचार रूपी पांच वृत्तियां होती है।
प	5 बार	पंच परमेष्टि में स्थान मिलता है।
त	1 बार	एक मात्र तारणहार है।
उ	1 बार	उद्धारक केवल नमस्कार महामंत्र।
ई	1 बार	सिद्धि हेतु एकमात्र साधन है।
च	2 बार	जन्म–मरण रूपी दो चक्रों का नाश करने वाला।
अ	1 बार	पाप के दो कारण राग–द्वेश विनाषक है।
ग	2 बार	दो गतियों की अशुभता दूर करने वाला।
ल	3 बार	तीन लोक से ऊपर के स्थान की प्राप्ति होती है।
न	5 बार	पांच प्रकार के ज्ञान का पोषक है।
क	2 बार	दो प्रकार के कर्म का शोषक है।
ण	13 बार	धर्म की राह में आने वाले सभी विघ्नों को रोकने वाले होते है।
ढ	1 बार	धर्म ही पाप की एक मात्र ढाल है।

संभवत उपर्युक्त तालिका आपको कल्पना के रंग लगे होंगे, लेकिन वास्तव में इस मंत्र के प्रत्येक अक्षर की ध्वनि में शुभ भाव भरे पडे हैं। प्रथम पांच पदों 24 गुरू अक्षर हैं, जो 24 तीर्थंकर की प्रचिन्त भाव उत्पन्न करवाते है। शेष 11 अक्षर चौबीसवें तीर्थंकर प्रभु महावीर के 11 गणधरों की प्रज्ञा से साक्षात्कार करवाते हैं।

अ, सि, आ उ, सा पंच पदों के प्रथमाक्षर भी रोचक दर्शन भाव जाग्रत करवाते हैं –

अ से अष्टापद

सि से सिद्धाचल

आ से आबू

उ से उज्जयनि

सा से सम्मेदशिखर जी जैसे तीर्थों की भाववाही यात्रा करवाते है।

पर्वतों का राजा मेरूपर्वत है, पर्वों का राजा पर्यूषणपर्व है, तीर्थों का राजा शत्रुंजयतीर्थ है। मंत्रो का राजा नमस्कार मंत्र है। सभी द्वादशांत्री की रचना अर्थात् सभी सूत्रों की रचना गणधरो नें की लेकिन नमस्कार मंत्र की रचना किसी ने नहीं की है, यह अनादि, सिद्ध व शाश्वत है।

श्री नमस्कार महामंत्र के जाप के बारे में जरूरी जानकारी –

किसी भी क्रिया का सम्पूर्ण फल प्राप्त करना हो तो विधिपूर्वक आराधना जरूरी है। किसान यदि विधिपूर्वक बोने आदि की क्रिया करता है, तो ही धान्य रूपी फल को प्राप्त कर सकता है, उसी प्रकार नमस्कार महामंत्र के जाप की विधि संक्षिप्त रूप से समझनी जरूरी है, इसलिए नीचे लिखी हुई बातों को ध्यानपूर्वक पढ़कर अमल में लाने का प्रयत्न करना हितकर है।

नवकार महामंत्र का स्मरण किसलिए ?

जैसे दवा से रोग शान्त होता है, भोजन से भूख शान्त होती है, उसी प्रकार नवकार के जाप से भी आंतरिक एवं बाह्य अशान्ति दूर होती ही है। अपना अनुभव इस बात का साक्षी नहीं देता, इसका कारण अपनी अज्ञानदशा है।

हम जन्म–मृत्यु के चक्र में फंसाने वाले कर्म रूपी रोग को पहचान ही नहीं सके हैं। इसलिए सही उपाय काम में नहीं ला सकते हैं। जीवन में पंचपरमेष्ठियों की सच्ची पहचान कर उनकी शरण में वृत्तियों को रखकर, प्रवृत्तियों को शान्ति की दिशा में मोड़ने हेतु नमस्कार महामंत्र का स्मरण करना जरूरी है।

नवकार मंत्र की माला किस प्रकार गिननी चाहिये ?

श्री नमस्कार महामंत्र के जाप में मौलिक शक्ति का विकास करने हेतु अधखुली मुट्ठी के रूप में चार अंगुलियां मोड़कर तर्जनी के बीच के वेढे पर माला रखकर, अंगुठे के ऊपर के वेढे से नख का स्पर्श न हो उस प्रकार मणके घुमाकर जाप करने का शास्त्रीय विधान है। जिससे मोक्ष की प्राप्ति होती है।

कैसी माला का उपयोग करना ?

नवकार मंत्र के जाप के लिए अट्ठारह अभिषेक की हुई माला, आचार दिनकर के प्रतिष्ठा मंत्र से प्रतिष्ठित और सूरिमंत्र या वर्धमान विद्या से अभिमन्त्रित होनी चाहिये।

किसी के द्वारा गिनी हुई माला से नमस्कार महामंत्र का जाप नहीं करना चाहिये एवं अपनी माला दूसरे को गिनने हेतु नहीं देनी चाहिये। माला को किसी के हाथ का स्पर्श भी नहीं होने देना चाहिये। माला रखने के लिए एल्यूमिनियम , स्टील, प्लास्टिक की किसी भी प्रकार की डिब्बी का उपयोग नहीं करना चाहिये। माला को स्वच्छ, सुन्दर, सुगन्धित कपड़े में रखें।

किस प्रकार की माला का उपयोग करना ?

सूत की माला फिर चन्दन, स्फटिक या नग – रत्नों की माला सर्वश्रेष्ठ है। प्लास्टीक की माला नहीं गिननी चाहिये। आज बिना समझ से प्लास्टिक की मालाएं बड़ी मात्रा में उपयोग में ली जाती हैं, वह उचित नहीं है। क्योंकि प्लास्टिक बनाने वाली कम्पनियों एवं वैज्ञानिकों से पत्र व्यवहार करने पर स्पष्ट जानने को मिला है कि –

''प्लास्टिक पेट्रोलियम द्रव्य जैसी वस्तु से बनता है, किन्तु आज के मोहक स्वरूप में तैयार करने हेतु बेल की आंतो का रस वगैरह अत्यन्त अशुद्ध द्रव्य काम में लिये जाते हैं।'' इसलिए प्लास्टिक की माला का एकदम त्याग करने हेतु ध्यान रखना चाहिये।

नवकार के जाप में अन्य किन बातों का ध्यान रखना :–

- श्री नवकार के जाप में एकाग्रता जरूरी है।
- माला एवं स्थान तय किये हुए होने चाहिये।
- एक ही स्थान पर आसन रखना जरूरी है ।
- एक ही माला पर जाप करना चाहिये ।

- उत्तर पूर्व इशान कोण सम्मुख बैठकर माला गिननी चाहिये। अपने सामने नवकार मंत्र का पट रखकर उस पर अपनी दृष्टि स्थिर कर एकाग्र मन से गिनना चाहिये।
- माला गिनते समय बांया हाथ माला को स्पर्श नहीं करना चाहिये। (दांये हाथ में तकलीफ हो तो छूट)
- श्री नवकार मंत्र का जाप शुरू करने से पूर्व श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ भगवान तथा शासनपति श्री महावीर भगवान का एवं अनंतलब्धिनिधान श्री गौतमस्वामी का नाम तीन बार लेना चाहिये।
- नवकार गिनने के लिए एक ही दिशा का ध्यान रखना चाहिये।
- शुद्ध वस्त्र पहनकर नवकार गिनने चाहिये।
- मालाएँ कितनी गिननी ?उसकी संख्या निश्चित रखनी चाहिये।
- उबासी नहीं खानी चाहिये।
- मुंह खुला रखकर नवकार नहीं गिनने चाहिये।
- उसी प्रकार जाप में होंठ नहीं हिलने चाहिये।

श्री नवकार मंत्र का जाप निम्न समय पर करना चाहिये।

सवेरे 6 बजे, दोपहर 12 बजे, शाम 6 बजे ब्रह्म मुहुर्त में गिनना।

वैसे सवेरे चार बजे से सूर्योदय तक श्रेष्ठ, सूर्योदय से एक घंटे तक मध्यम और सवेरे 10 बजे तक सामान्य कहा जाता है।

श्री नवकार महामंत्र जाप के लिए कैसा आसन रखना ?

सफेद ऊन का आसन रखना चाहिये।

श्री नवकार मंत्र के जाप हेतु कौनसी दिशा योग्य ?

जाप के लिए पूर्व और उत्तर दिशा अच्छी है। उसमें भी प्रातः 06 बजे तक के जाप के लिए पूर्व दिशा और सूर्यास्त से एक घंटे बाद के जाप के लिए उत्तर दिशा योग्य है।

श्री नवकार मंत्र का जाप कैसे किया जाये ?

- शुद्ध होकर, श्वेत वस्त्र पहनकर, अनुकूल स्थान पर भूमि प्रमार्जन करके।
- पूर्व या उत्तर दिशा में आसन पर बैठकर।
- नमस्कार मंत्र का जाप हाथ पर करना सर्वश्रेष्ठ है।

- हृदय कमल के समान कली के रूप में एक पद की एक पांखुड़ी में स्मरण करने से फल अनेक गुणा बढ़ जाता है। हृदय कमल विकसित होता है।
- सूत की श्वेत माला लेकर, श्वेत कटासना बिछाकर, उणोदरी व्रत के पालनपूर्वक।
- चित्त को ''शिवमस्तु सर्वजगतः'' की भावना से वासित करके।
- दृष्टि को नासिका के अग्र भाग पर स्थापित करके।
- धीरे–धीरे उसका प्रत्येक अक्षर पूरे शरीर में घुमें, उस प्रकार से नवकार का जाप करना चाहिये।
- जाप की संख्या एक ही रखनी चाहिये अर्थात् पांच माला गिनने के नियम वाला पुण्यशाली आराधक छः माला गिन सकता है, किन्तु पांच से कम नहीं गिनना चाहिये।
- जाप की माला बदलनी नहीं चाहिये।
- जाप करते समय शरीर नहीं हिलना चाहिये, कमर मुड़नी नहीं चाहिये। टेका लेकर नहीं बैठना चाहिये।
- मानस जाप में होंठ बन्द रहने चाहिये और दांत खुले रहने चाहिये।
- उपांशु जाप में होठों का स्पंदन व्यवस्थित रहना चाहिये।
- भाष्य जाप में उच्चारण तालबद्ध रहना चाहिये।
- जाप पूरा होने के बाद कम से कम पांच मिनट तक आंखे बन्द कर उसी स्थान पर बैठना चाहिये। ऐसा करने से जाप जनित सत्व के स्पर्शन का अद्‌भुत योग साधा जाता है, और कभी भाव समाधि के अनमोल पल मिल जाते हैं।
- जाप के उपकरणों को पूर्ण बहुमान के साथ पवित्र स्थान पर रखना चाहिये।
- उपकरणों के प्रति अपना भाव श्री नवकार के प्रति अपने भाव को असर पंहुचाता हैं।
- जीभ अकेली ही नहीं, परन्तु मन बराबर नवकार गिनना सीख जायें, उस ओर अपना लक्ष्य रहना चाहिये।
- बड़ा भाई छोटे भाई को कविता सिखाये उसी प्रकार अपने को मन रूपी छोटे भाई को सद्‌भावनापूर्वक श्री नवकार सिखाना चाहिये।
- मन श्री नवकार में लग जाता है तो सभी इन्द्रियां भी उसमें ओतप्रोत बन जाती है।

- तैरने वाले का शरीर भीगे बिना नहीं रहता, वैसे ही श्री नवकार में प्रविष्ट प्राण भी शुभ भाव में भीगते ही हैं। यदि नहीं भीगें तो समझना चाहिये कि अपने प्राणों का अधिकतर भाग नवकार के बाहर रहता है।
- श्री नवकार गिनते समय नीचे की भावना सतत भाते रहें। ''श्री नवकार के बाहर जन्म, दुःख और मृत्यु है। श्री नवकार के अन्दर शाश्वत सुखों का महासागर है।''
- ''शाश्वत सुख के प्रति अपना यथार्थ पक्षपात हम सभी को जल्दी से जल्दी श्री नवकार के अचिंत्य प्रभाव का पक्षकार बनाये।''

महामंगल श्री नवकार

- श्री नवकार मंत्र गिनने वाले मनुष्य का पाप नष्ट होता है।
- नवकार मंत्र सुनने वाले मुनष्य का पाप नष्ट होता है।
- नवकार मंत्र सुनाने वाले व्यक्ति का भी पाप नष्ट होता है।
- अरे! जहाँ–जहाँ इसके श्वासोच्छ्वास का स्पर्श होता है, उनका भी पाप धुल जाता है।
- सभी लोगों के पापों को नष्ट करने की शक्ति नवकार में है।
- नवकार मंत्र अर्थात् मंथन द्वारा प्राप्त किया हुआ शुद्ध घी। नवकार मंत्र की आराधना के वातावरण से विराधना की दुर्गन्ध दूर होती है। आराधना की सुवास फैलती हे।
- नवकार मंत्र की महिमा से विघ्न टलते हैं, आत्मा में निर्मलता आती है, वांछित फलित होते हैं और अग्नि जल में परिवर्तित हो जाये, ऐसी इस मंत्र की महिमा अपरंपार है।
- तीनों काल में नवकार मंत्र शाश्वत है, सनातन है। दुनिया के सभी शब्द बदल जायें, किन्तु नवकार मंत्र के शब्द तीनों काल में नहीं बदलते हैं।

श्री नवकार महामंत्र के जाप का असर कब ?

जैसे छिछले बर्तन में बिलौना नहीं होता, वैसे ऊपर–ऊपर से श्री नवकार का जाप नहीं होता है। जितनी जाप की एकाग्रता उतनी ही गंभीरता से तादात्म्य है। बीज को धरती में बोना पड़ता है, वैसे ही नवकार के प्रत्येक अक्षर को उच्च भावपूर्वक मन के द्वारा प्राणों में विराजमान करना चाहिये।

अक्षर में रहा हुआ चैतन्य, प्राण का योग प्राप्त कर प्रकट होता है, उससे जाप करने वाले पुण्यशाली की भावना अधिक उज्ज्वल बनती है, और स्वाभाविक रूप से सर्वोच्च आत्मभाव–सम्पन्न भगवंतों की भक्ति की ओर मुड़ती है।

श्वासोंश्वास में जीवन के हर क्षण में इसका स्मरण करना चाहिये आचार्य देवेश श्री यशोदेव सूरि जी म.सा. रोज नवकार की 40–50 माला गिनते थे, उन्होंने कुल 36 करोड़ नवकार का जाप किया पंन्यास श्री अभय सागर जी म.सा. नवकार मंत्र के अहम् उपासक थे। पंन्यास श्री भद्रकंर विजय म. सा. महामंत्र के अहम् उपासक थे।

श्री नवकार में पंच परमेष्ठी भगवंत विराजमान हैं। ऐसा जानने के बावजूद उनके प्रति अपने परम पूज्य भाव में यांत्रिकता और औपचारिकता कायम रहती है, तो वह वास्तव में अपनी शोचनीयता गिनी जायेगी।

पंच परमेष्ठी भगवंतों को ही याद करने के अवसर पर अन्य–अन्य बातें अपने मन पर कब्जा कर लेती हैं और हम उसे निभा लेते हैं, तो वह अपनी कायरता की निशानी है।

पंच परमेष्ठी भगवन्तों का भावपूर्वक सतत् स्मरण करने मात्र से आत्मा को जो अकल्पित लाभ होता है, उसका एक लाखवां हिस्सा भी अन्य विषय को भावपूर्वक समर्पित होने के बावजूद नहीं मिलता है।

पंच परमेष्ठी भगवन्तों को उल्लासपूर्वक याद करने से आत्मा के पास जाया जाता है, आत्मा के ज्यादा नजदीक जाने से आत्मभाव पोषक प्रवृत्तियों में हृदय लीन रहता है, विषय कषायों को भाव देने के परिणाम मन्द हो जाते हैं, स्वाध्याय, संयम तप आदि में अद्‌भूत वेग आता है और बर्हिभावों के अनुकूल की विचारधारा ज्यादा सूक्ष्म बनकर आत्मभाव का पक्ष करती है।

भव को विविध प्रकार के भाव देकर हम भाव से छोटे–तुच्छ न बने होते, तो श्री नवकार अपने को तुरन्त फलित होता दिखाई देता, उसी नवकार से हम पूरे विश्व में देवाधिदेव श्री अरिहंत परमात्मा की सर्वोच्च भावना की पूरी–पूरी प्रभावना कर सकते। भूतकाल में अपने पूर्वजों ने प्रभुजी के परम तारक शासन की प्रभावना के जो महान कार्य किये हैं, उस प्रकार के सभी मंगलमय कार्य आज हम भी कर सकते हैं।

नवकार मंत्र का मनोविज्ञान –

संक्षेप में सांराश में यह कह सकते है कि – णमोकार मंत्र ही मंत्र की वह अर्न्तदृष्टि है जो हमें सीमा से असीमा तक ले जाती है। यह मंत्र ही वह किनारा है जो हमें उस पार ले जाता है। नवकार मंत्र अपने आप में एक सम्पूर्ण शास्त्र है, एक साधना पथ है तथा भगवान महावीर की सम्पूर्ण साधना पद्धति और साधना का विकास इसी मंत्र में समाया है ।

नवकार मंत्र सरल सीधा व गहरा है।इस मंत्र से सरल कोई अन्य नहीं हो सकता। इससे व्यक्ति को सीधा ही मांगल्य भाव में पाप से छुटकारा मिलता है। नवकार को इस प्रकार समझ सकते हैं – मंत्र का सार , मानवता का सार, धर्म, शास्त्र अध्यात्म व मनोविज्ञान का सार। यदि नवकार मंत्र का प्रयोग करना आ जाए तो मन को एकाग्रता के साथ शुद्ध करने में बड़ा उपयोगी है।

मंत्र के जाप करने की तीन विधियाँ इस प्रकार है –

1 भाष्य

2 उपांशु

3 मानस

जिसका हम उच्चारण करते हुए जाप करना, वह भाष्य जाप है वह मंत्र हैं।जिसका उच्चारण होठ बंद करके मन में बोलकर इसे करतें हैं वह उपांशु होता है।तीसरी विधि वह जिसमें मंत्र मन में उतरता है, हमारी श्वास के साथ एकाकार होता है तथा अन्तर के शून्य में साकार होने लगता है वह मानस है।

मंत्र व्यक्ति का विश्वास है, आत्मविश्वास है, साहस है वह भी मन का विश्वास। इस मंत्र को आत्मसात् करने के लिए हमे केवल हृदय की तन्मयता , हृदय से समर्पण व हृदय से नमन करना चाहिये।

सुख सभी प्रशंसनीय नहीं हैं तो
दुःख सभी निंदनीय भी कहाँ हैं ?
आ. वि. रत्नसुन्दरसूरि

नौ ग्रह एवं नमस्कार मंत्र

विशिष्ट अक्षरों के संयोजन का नाम मंत्र है। मंत्र अपने ध्वनि – संघर्ष के द्वारा विविध शक्तियों को आकर्षित करते हैं। कुछ मंत्र एकांत में आत्म विजय प्राप्त करने में सहायता प्रदान करते हैं और कुछ मंत्र भौतिक शक्तियों का आह्वान करते हैं। हमारा उद्धेश्य आत्म शुद्धि का रहे तो उसका उपयोग होगा।

मंगल मंत्र – ऊँ अ–सि–आ–उ सा नमः। यह नमस्कार मंत्र के पांचों पदों का बीज मंत्र है। इसकी रोजाना एक माला फेरे।

ग्रहानुसार महामंत्र –

चंद्र और शुक्र – ऊं हीं णमों अरिहंताणं

सूर्य और मंगल – ऊं हीं णमों सिद्धाणं

गुरू – ऊं हीं णमों आयरियाणं

बुध – ऊं हीं णमों उवज्झायाणं

शनि – राहु – केतु – ऊं हीं णमों लोए सव्वसाहूणं

नवकार मंत्र से लाभ व कर्म निर्झरा

- नवकार मंत्र का अरिंहत पद 400 बार बोलने से एक उपवास का लाभ मिलता है।
- सिद्ध पद के 300 बार बोलने से एक उपवास का लाभ मिलता है।
- सफेद पुष्पों के साथ 1 लाख महामंत्र का जाप 20 दिन तक विधि पूर्वक करने पर अवश्य तीर्थंकर नामकर्म का बंध करता है।
- एक लाख जाप करने से तीर्थंकर नाम कर्म बंधता है व नरक गति दूर होती है।
- नवकार मंत्र के एक अक्षर से 7 सागरोपम पापों का नाश होता है।
- नवकार मंत्र के पद से 50 सागरोपम पापों का नाश होता है।
- सम्पूर्ण नवकार मंत्र बोलने से 500 सागरोपम पापों का नाश होता है।
- सम्पूर्ण नवकार मंत्र की एक माला गिनने से 54000 सागरोपम के अशुभ पापों का नाश होता है।

णमोकार – मंत्र

विभिन्न लिपियों में निम्न प्रकार है : –

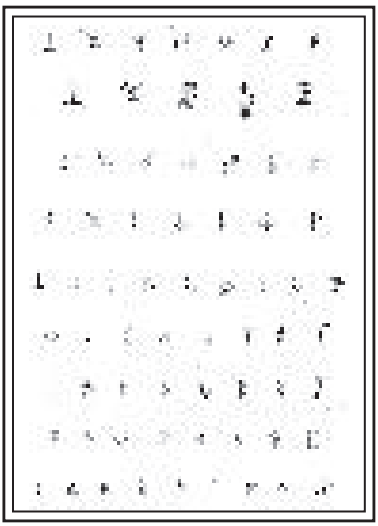

ब्राह्मी

卐 **नमस्कार–मंत्र** 卐

नमो अरिहंताणम्
नमो सिद्धाणम्
नमो आयरियाणम्
नमो उवज्झायाणम्
नमो लोए सव्वसाहूणम्
एसो पंच नमुक्कारो
सव्व पावप्पणासणो
मंगलाणं च सव्वेसिं
पढंम हवई मंगलम्

हिन्दी

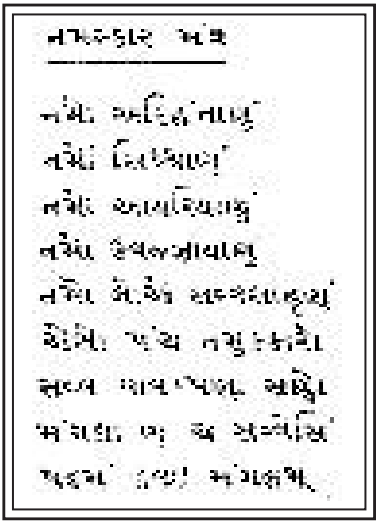

गुजराती

तामिल

विविध लिपि में

णमोकार – मंत्र

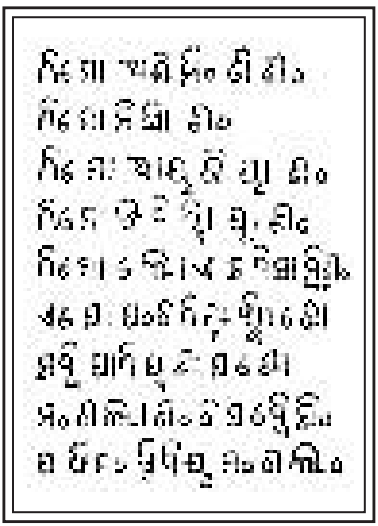

उड़ीया

(Navakara Mantra)

Namo Arihantanam.
Namo Siddhanam.
Namo Ayariyanam.
Namo Uvajjhhayanam.
Namo Ioe Savvasahunam.
Eso Pancha Namukkaro,
Savva Pavappanasano,
Mangalam cha Savvesim.
Padhaman Havai Mangalam.

अंग्रेजी

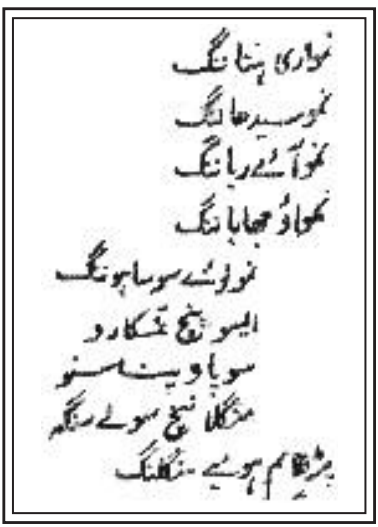

उर्दू

गुरूमुखी (पंजाबी)

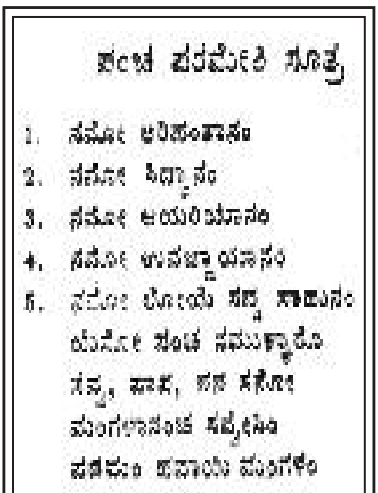

विविध लिपि में

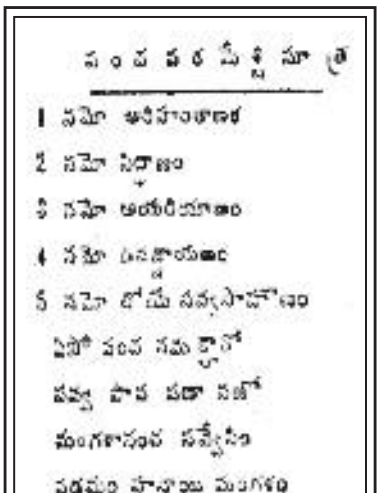

णमोकार – मंत्र

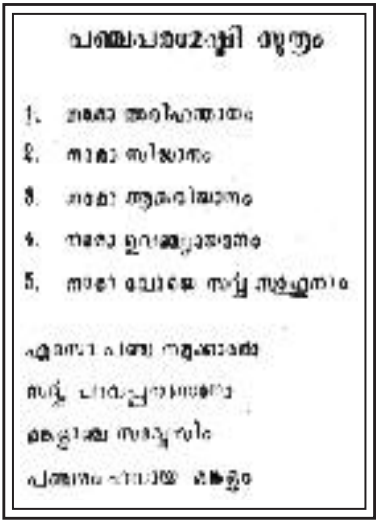

कन्नड़

तेलगु

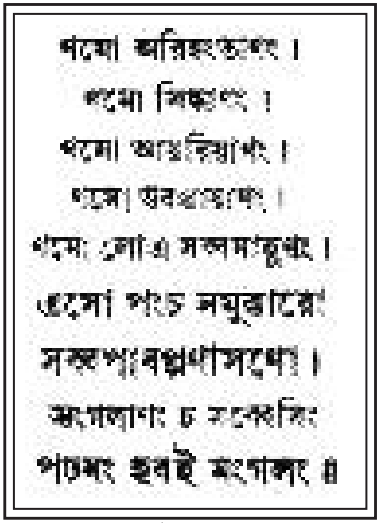

मलयालम्

बंगला

णमोकार मंत्र महामंत्र है, शक्तिशाली है, ऐसा क्यों ?

जिस प्रकार से हम तन स्वस्थ की कामना करते हैं तो मन भी स्वस्थ होना चाहिए। हमारा तन स्वस्थ न हो या शरीर सुंदर न हो हम केवल शारीरिक सौंदर्य की ओर विचार करते है तो हमारी यह भूल है वरन् मस्तिष्क सुंदर होना चाहिये। चाहे हमारा शरीर कुरूप हो। यदि मस्तिष्क सुन्दर नहीं है अर्थात् पागल है तो वह शारीरिक सांदर्य किस काम का है। यदि मस्तिष्क स्वस्थ रहेगा तो मन भी स्वस्थ रहेगा। अतः मस्तिष्क व शरीर अर्थात् तनमन एक दूसरे से जुड़े है।

मन स्वस्थ रहने के लिए भी हमे किसी न किसी आध्यात्मिक शक्तिकी आवश्यकता रहती है। यह कहना भी अतिश्योक्ति नहीं होगी कि संसार से उपलब्ध मंत्रों में से णमोकार मंत्र ही अधिक शक्तिशाली है। केवल यह जैन परमपरा में यह मंत्र शक्तिशाली है, यह बात नहीं। अन्य विद्वान भी इस बात को स्वीकार करने लगे हैं कि इस मंत्र के अतिरिक्त कोई मंत्र नहीं है। कई अजैन का उदाहरण बहुरत्ना वसुन्धरा धरा गणि महोदय सागर जी म.सा. ने प्रस्तुत कर यह सिद्ध किया है वे लोग यहां तक मुस्लिम समाज ने इसको अंगीकार किया।

अभी कुछ वर्ष पूर्व ही सरदार शहर में इस विषय को जानने वालों में से एक अजैन ने कहा कि ''मैंने अनेक मंत्रों का जाप किया लेकिन णमोकार मंत्र की तुलना में कोई मंत्र शक्तिशाली नहीं पाया।

इससे प्राणशक्ति प्राप्त होती है। हमारे सम्पूर्ण शरीर में विद्युत की आवश्यकता है। विद्युत क्या है ?विद्युत से ही शरीर चमकता है। अर्थात् विद्युत ही महामंत्र है जो शक्ति का संचार करती है। इसकी विधिपूर्वक जॉप करने से ही फलदायी व शक्तिशाली होता है।

एक बार मंत्र के प्रथम पद ''णमो अरिहंताणं'' बोलने से ही समर्पण भाव पैदा हो जाता है। समर्पण भाव होते ही गुरु–देव मिल जाते हैं।

णमो सिद्धाणं का उच्चारण करते है तो सिद्धाणं सूर्य का सूचक है जिसके भीतर सम्पूर्ण सौर मण्डल होते हैं इसी से शक्तिका संचार होता है।

इसी प्रकार अन्य पदों से भी शक्तिका संचार होता है लेकिन णमो लोए सव्वसाहूणं सबसे शक्तिशाली मंत्र है। इसके पाठ करने से शारीरिक पीड़ा दूर होकर शक्ति का संचार होता है।

णमोकार मंत्र एक वैज्ञानिक मंत्र भी है। हम इस प्रकार देखते हैं कि जिस मंदिर में साधना–आराधना होती हो वैसी ही उसकी दीवारें भी चार्ज हो जाती है और उसका प्रभाव हमारे पर पड़े बिना नहीं रहता। इसी कारण से मंदिर में शांति मिलती है। यदि ऐसा ही अपने घर को भी बनावे तो हमको कितनी शांति प्रदान होगी और शांति से कितनी ऊर्जा मिलेगी इसकी कल्पना कीजिए।

जैसा कि हमने ऊपर स्पष्ट किया है कि शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य के साथ गहरा संबंध है, हमने यह भी स्पष्ट किया कि णमोकार मंत्र के प्रत्येक पद, रंग कितना प्रभावी है और उसका कैसे प्रयोग किया जावे, जिससे स्वास्थ्य के साथ जुड जाए। यदि स्वास्थ्य के नहीं जुड़ता तो प्राण के साथ भी नहीं जुड़ताऔर प्राण के साथ नहीं जुड़ने पर तो वह मंत्र प्रभावी नहीं होता पर तो वह मंत्र प्रभावी नहीं होता शक्तिशाली नहीं बनता।

वर्तमान युग में जितना विज्ञान ने जाना है उसके माध्यम से जैन धर्म के संबंध में अपने ज्ञान को बढ़ाया और वह यह है कि वर्ण विज्ञान ज्योतिष विज्ञान आदि से जब णमोकार मंत्र का विश्लेषण करे तो ही इसकी शक्ति महाशक्तिका बोध होता है अंत में यही कहा जा सकता है कि इस मंत्र की शक्तिको जाने औरमनन करे और कोशिश करें कि इस मंत्र में अपूर्व शक्तिहै। इसी भाव से हम इन सारे रहस्य को समझ पायेंगे कि इस महामंत्र के द्वारा शरीर बल, बुद्धिबल मनोबल व आत्मबल विकसित करने में सफल हो सकेंगे।

जैन धर्म का मूल ग्रन्थ – आगम

(जैन सम्प्रदाय की रामायण)

भगवान महावीर के निर्वाण के बाद 12 वर्ष के 2–3 दुष्काल पड़े जिससे साधुगण और आचार्य भगवंत के जीवन निर्वाह करना ही कठिन हो गया था तब वे उनके अध्ययन अध्यापन से दूर रहे। इस हेतु कई वर्षो तक उनका पुनरार्वतन बंद हो गया जिससे वे बहुत से आगम विस्मृत हो गये और भगवान महावीर के निर्वाण के 170 वर्ष बाद जैन संघ में श्रुत केवली का अभाव हो गया था और केवल 10 पूर्वधर ही रह गये थे। वे भी सीमित थे। इन्हीं योग्यता को ध्यान में रखकर जैन संघ ने दश पूर्वधर ग्रंथित ग्रन्थों का आगम में समावेश कर लिया गया । चतुर्दश व दश पूर्वधर वे ही साधक हो सकते है जिनमें नियत सम्यकदर्शन होता है। अपनी स्मृति पर बोझ न बढ़ाकर जैन आगमों को लिपिबद्ध करके ही जैन आगमों को बचा सकते है। इसके लिए समय – समय पर निम्न स्थानों पर आचार्यों ने एकत्रित होकर विचार विमर्श किया गया।

1 <u>पाटलीपुत्र वाचना –</u> भगवान बुद्ध के उपदेशों को व्यवस्थित करने के लिए कई सगोष्ठियां की। इसी प्रकार भगवान महावीर के उपदेशों को व्यवस्थित करने के लिए जैनाचार्यों ने तीन वाचनाएं की थी और जैन श्रुत को व्यवस्थित किया।

भगवान महावीर के निर्वाण के 162 वर्ष बाद पाटलीपुत्र में दुर्भिक्ष के बाद जैन श्रमण संघ को एकत्रित किया। उन्हीं दिनों मध्यप्रदेश में अनावृष्टि के कारण जैन श्रमण बिखर गये। एक दूसरे से पूछ कर 11 अंगों को व्यवस्थित किया और उनमें भी सम्पूर्ण दृष्टिवाद का समावेश नहीं था।

उस समय दृष्टिवाद के ज्ञाता आचार्य भद्रबाहू 12 वर्ष की योग मार्ग की साधना के लिए नेपाल में थे। अतः संघ ने श्री स्थूलभद्र को अन्य अनेक आचार्यों के साथ आचार्य भद्रबाहू के पास भेजा। इसमे स्थूलभद्र ही समर्थ सिद्ध हुए। उन्होंने दश पूर्व सीखने के बाद अपने श्रुत लब्धि का प्रयोग किया और सफल हुए, इस बात का श्री भद्रबाहू स्वामी को पता लगा तो उन्होंने अध्यापन कराना बंद कर दिया और शेष चार विद्या की केवल वाचना की। इस प्रकार श्री स्थूलभद्र के पास दश पूर्व का ज्ञान (श्रमण संघ के पास) रह गया। श्री स्थूलभद्र की मृत्यु के बाद 12 अंगो में से 11 अंग और दश पूर्व का ज्ञान शेष रह गया।

2 उडीसा वाचना – निर्वाण के 300 वर्ष के बाद उड़ीसा में वाचना होने का उल्लेख है।

3 माथुरी वाचना – नन्दीसूत्र की चूर्णी में उल्लेख है कि द्वादशवर्षीय दुश्काल में सूत्र नष्ट हो जाने पर आर्य स्कंदिल के नेतृत्व में (बारह वर्ष दुश्काल के बाद) साधुसंत मथुरा में एकत्रित हुए और जिसको जो याद था उसी के आधार पर सूत्रों को व्यवस्थित किया। यह वाचना मथुरा में हुई इसलिये माथुरी वाचना कहलाई।इसका समय वीर स. 827–840 का माना गया है।

4 वालभी वाचना – वीर सं.827 में जब मथुरा में वाचना हुई थी उसी काल में वालभी में नागार्जुन सूरि ने श्रमण संघ को एकत्रित करके आगमों को व्यवस्थित करने का प्रयास किया।उस समय नागार्जुन और संघ को जो आगम, अनुयोग व प्रकरण याद थे वे लिखे गये इसलिये वालभी वाचना या नागार्जुनीय वाचना भी कहते हैं।

5 देवर्धिगणि का पुस्तक लेखन – उपर्युक्त वाचनाओं के सफल होने के 150 वर्ष पश्चात् वी. सं. 980 में वालभीनगर में देवर्धिगणि क्षमाश्रमण की अध्यक्षता में श्रमण संघ एकत्रित हुआ और उपर्युक्त जो–जो ग्रन्थ विद्यमान थे उन सबको लिखकर सुरक्षित करने का जिम्मा लिया और इसमें दोनों वाचनाओं के सिद्धान्तों का परस्पर समन्वय कर भेदभाव मिटाया और एकरूपता लाकर लिपिबद्ध किया।

जैन धर्म एक स्वंतन्त्र धर्म है, स्वंतन्त्र धर्म होने पर प्रत्येक धर्म का एक मूल ग्रन्थ होता है जैसे –

1 वैदिक धर्म का ..... वेद

2 बौद्ध धर्म का ..... त्रिपिठक

3 पारसी धर्म का ..... अवेस्ता

4 ईसाई धर्म का ..... बाईबिल

5 मुस्लिम धर्म का ..... कुरान

तो प्रश्न यह है कि जैन धर्म का मूल ग्रन्थ कौनसा ? ऐसा प्रश्न अन्य धर्मनिष्ठ व्यक्ति एवं धर्म प्रेमी को भी करते देखे गये। इस संबंध में मेरी अपनी मान्यता है कि जैन धर्म एक विस्तृत, वृहद्, विशाल है जिसको एक ग्रन्थ में सीमित नहीं रखा जा सकता इसलिए उसके पृथक –पृथक भाग आचरण के आधार पर है जिसको हम आगम कहते है।

इसमें तीर्थंकर की वाणी निहित है। श्री श्वेताम्बर जैन सर्वमान्य वर्तमान आगम ही मौलिक व प्रमाणिक है। इनके प्रमाणिकता के बारे में अधिक लिखना उपर्युक्त न मानते हुए केवल कुछ लेखकों को ही उद्धत करेगें जो जैन आगमों के प्रगाढ़ अभ्यासी रहे है।

डॉक्टर हर्मन जेकोबी व अन्य यूरोपीयन स्कालरों ने ही इन आगमों को वास्तविक ''जैन श्रुत'' मान लिया और इसी आधार पर जैन धर्म को प्राचीन माना है। इस बात को कान्ताप्रसाद जैसे विद्वान (दिगम्बर सम्प्रदायी) भी स्वीकार करते हैं। उन्होंने अपनी ''भगवान महावीर'' नामक पुस्तक में लिखा है ''जर्मनी के डॉ. जेकोबी सदृश विद्वानों ने जैन शास्त्रों को प्राप्त किया और उनका अध्ययन करके उनको सभ्य संसार के समक्ष प्रकट भी किया कि श्वेताम्बर राम्नाय के अग्र ग्रन्थ हैं और डॉ. जेकोबी इन्हीं को वास्तविक जैन श्रुत शास्त्र समझते हैं।

यहाँ यह भी स्पष्ट होना आवश्यक है कि जिस संघ में महावीर के मुख्य शिष्य (गणधरों) के मुख से जो शब्द निकले थे वे उसी रूप में आज भी है या नहीं। यहाँ यह भी लिखना अपना कर्तव्य समझता हूँ कि ऐसा किसी ने भी दावा नहीं किया वरन् उन्होंने तो भिन्न भिन्न समय में अंगसूत्रो को संकलित कर, उन्हें किस प्रकार व्यवस्थित किये यह भी पूर्वाचार्यों ने स्पष्ट किया। इसकी जानकारी संक्षेप में आगे वर्णन करेंगे।

दिगम्बर जैन सम्प्रदाय भी पहले इन्हीं आगमों को प्रमाणिकर मानते थे जिन्हें श्वेताम्बर समाज मानते हैं परन्तु 6ठ्ठी. शताब्दी से दिगम्बर सम्प्रदाय विचार विभेद से श्वेताम्बर समाज से पृथक् हो गये। जैसे – केवलिमुक्ति और स्त्री मुक्ति गर्भापहार। दिगम्बर सम्प्रदाय ने तभी से इन आगमों को अप्रमाणिक कहकर छोड़ दिया और उनकी नई रचनाओं से अपनी परम्परा को समृद्ध करने लगे।

दिगम्बर विद्वान महावीर के गर्भापहार की बात को अर्वाचीन माना है जबकि यह मान्यता दो हजार वर्ष से अधिक प्राचीन है, ऐसा कथन डॉ. जेकोबी आदि विद्वानों का है। इस संबंध में मथुरा के कंकाली किला में से निकले हुए गर्भापहार का शिलापट्ट देखने से स्पष्ट हो जाएगा जो मथुरा के म्यूजियम में सुरक्षित है।

इन आगमों में सभी धार्मिक, सामाजिक, व्यावहारिक, व्याकरण, शुभ–अशुभ, उपदेश, आदेश आदि का समावेश हो जाता है। ये आगम जिन परिस्थितियों में तब थे, वहीं आज भी हैं।

भगवान महावीर के निर्वाण के 980 वर्ष बाद यदि देवर्धिगणि के समय तक स्थिति एक सी नही रही, सभी आगमों का उल्लेख नन्दीसूत्र में कर लिया।

पूर्व में आगमो की संख्या 84 निश्चित हुई, और छोटे–छोटे ग्रन्थो का निर्माण हुए मुख्य सिद्धान्त स्याद्वाद, कर्मवाद परमाणुवादादि बिन्दुओं में सम्मिलित किए। इनको समझने के बाद कोई भी साधन शेष नहीं रह जाता इसका वर्णन भविष्य में किया जावेगा। आगम को अरिहन्त देव ने अर्थ रूप में कहा उसी को गणधरों ने सूत्र रूप में संकलित किया –

इन सूत्रों पर वीर निर्माण की दूसरी शताब्दी में चतुर्दश पूर्वधर श्री भद्रबाहु सूरि ने नियुक्ति की रचना कर सभी को संकलित किया। सूत्र पर वि.सं. की तीसरी शताब्दी में आचार्य गन्धहस्तसूरि ने विस्तृत टीका की रचना की, टीका वर्तमान में उपलब्ध नहीं है। गन्ध हस्तसूरि की टीका को सामान्य व्यक्ति नहीं समझ सका। जैन आगमों की टीका सबसे प्राचीन संस्कृत आचार्य श्री हरिभद्र सूरि जी ने की उनका समय वि. 757 से 857 के बीच का है। इन्होंने प्राकृत चूणियों का संस्कृत में अनुवाद किया इसके बाद स. 933 में श्री शीलांगाचार्य ने सरल भाषा में टीका रचना की। जिसमें से आचारांग सूत्रकृतांग दोनो टीका उपलब्ध है, शेष नहीं है। शेष टीका का अभाव देखकर सं. 1120 में चन्द्रकुलीन आचार्य श्री अभयदेव सूरि ने 9 आगमों की टीका की रचना कर नवांगी टीकाकार कहलाए (जो उपलब्ध है।) श्री हरिभद्र सूरि जी ने टीका लिखी इनकी टीकाएँ तथा उक्त दोनों टीका (आचारंग व सूत्रकृत) व सभी टीकाएँ भी कठिन लगने लगी तो वि. की 16 वीं शताब्दी में श्री जिनहंससूरि ने आचारांग की दीपिका की रचना की उक्त तीनों कठिन लगी तो वि. की 16वी शताब्दी में श्री पार्श्वचन्द्र सूरि ने उक्त आगमों की टीका को गुर्जर भाषा (गुजराती भाषा) में अनुवाद किया। आगम पद निर्धारित किये जिसको इस प्रकार देखे जा सकते है – पूर्व व वर्तमान में कितने श्लोक पद है इस पर दृष्टि डाले :–

	नाम सूत्र	पद	पदो की संख्या	वर्तमान श्लोक
1.	श्री आचारांग सूत्र	18000	9195923187000	2525
2.	श्री सूत्रकृतांग	36000	18391846374000	2100
3.	श्री स्थानायांग	72000	36783692748000	3600
4.	श्री समवायांग	144000	73567385496000	1667
5.	श्री व्याख्या प्रज्ञप्ति (भगवती सूत्र)	288000	147134770992000	5752
6.	श्री ज्ञातांग (ज्ञाता धर्म कथा)	576000	294269541984000	5400

नाम सूत्र	पद	पदो की संख्या	वर्तमान श्लोक
7. श्री उपासक दषांग	1152000	588539083968000	812
8. श्री अन्तगढ़ दशांग	2304000	117707816793600	899
9. श्री अनुन्तरोप पातिक	4608000	2354156335872000	192
10. श्री प्रश्न व्याकरण	9216000	470831267174000	1256
11. श्री विपांक सूत्र	18432000	941662534348000	1217

नोट :– एक पद में 51088621/½ श्लोक होते हैं।

2.) उपांग – 12

1. ओपपातिक
2. राज प्रश्नीय
3. जीवाभिगम
4. प्रज्ञापना
5. सूर्य प्रज्ञप्ति
6. जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति
7. चन्द्रप्रज्ञप्ति
8. निरयावली
9. कल्पवतंतिका
10. पुष्पिता
11. पुष्पचूलिका
12. वृष्णिदशा

3) छेद : 6

1. व्यवहार
2. बृहत्कल्प
3. निशीथ
4. दशाश्रुतस्कंध
5. महानिशीथ
6. जीतकल्प

4) मूल – 4

1. दशवैकालिक
2. उत्तराध्ययन
3. आवश्यक निर्युक्ति
4. पिण्ड निर्युक्ति

5.) प्रकीर्णक – 10

1. चतुःशरण
2. आतुर प्रत्याख्यान
3. भक्तपरिज्ञा
4. संस्तारक
5. तदुलवैचारिक
6. चन्द्रवैध्यकः
7. देवेन्द्रस्तव
8. गणि विद्या
9. महा प्रत्याख्यान
10. वीरस्तव

6.) चूलिका सूत्र

1. नन्दीसूत्र 2. अनुयोगद्वार

46 कल्पसूत्र

47 यति जीतकल्य

48 श्राद्धजीत कल्प

49 पाक्षिक सूत्र (आवश्यक सूत्र का अंश)

50 क्षमापना सूत्र (आवश्यक सूत्र का अंश)

51 वंदितु

52 ऋषिभाषितं

53–72 – (20) अन्य पयन्ना

1. अजीवकल्प	2. गच्छाचार	3. मरणसमाधि
4. सिद्धप्राभूत	5. तीर्थोद्गार	6. आराधनापताका
7. द्वीपसागर प्रज्ञप्ति	8. ज्योतिपकरण्डक	9. अंग विद्या
10. तिथि प्रकीर्णक	11. पिण्ड विशुद्धि	12. सारावली
13. पर्यन्ताराधना	14. जीव विभक्ति	15. कवचप्रकरण
16. योनि प्राभूत	17. अंग चूलिया	18. वग्ग चूलिया
19. वृद्धचतुःशरण	20. जम्बूपयन्ना	

73–83 – (11) निर्युक्ति

1. आवश्यक निर्युक्ति	2. दशवैकालिक निर्युक्ति	3. उत्तराध्ययन निर्युक्ति
4. आचारांग निर्युक्ति	5. सूत्रकृतांग निर्युक्ति	6. सूर्य प्रज्ञप्ति निर्युक्ति
7. वृहत्कल्प निर्युक्ति	8. व्यवहार निर्युक्ति	9. दशाश्रुतस्कंध निर्युक्ति
10. ऋषिभाषित निर्युक्ति	11. संसक्त निर्युक्ति	

84 – विशेष आवश्यक भाष्यः

उक्त सभी आगमों का अर्थात् 84 आगमों में से बहुत से आगमों का उक्त 45 आगमों में अर्न्तभाव हो जाते हैं या निर्युक्ति, टीका, चूणि है।

इसलिए 45 आगम जो मूर्तिपूजक सम्प्रदाय मानता है वर्णन इस प्रकार है।

1. आचारांग सूत्र – इसमें आचार के सिद्धान्तों और नियमों के लिए जिस मनोवैज्ञानिक आधार को अपनाया है वह आज भी उपयोगी है। यह सूत्र सार्वभौम है, जो किसी सम्प्रदाय विशेष का नहीं है। यह एक पारस पत्थर (ग्रन्थ) है जो उन सबके लिए है जो साधना, भाव, भक्ति से समर्पित है। इस सूत्र में भगवान महावीर की साधनात्मक देशना ही नहीं है वरन् करूणा की सहिष्णुता भी है। आगम ज्ञान तीर्थ है तो आचारांग सूत्र प्रथम तीर्थ है। इसका हर अध्याय साधना मार्ग का मील का पत्थर है। इस सूत्र में साधु एवं श्रावक के अच्छे आचारों का वर्णन है। इसमें दो श्रुतकन्ध व 25 अध्याय है। इसके द्रव्यानुयोग, गणितानुयोग धर्म कथानुयोग चरणकरणानुयोग आदि अनुयोगों का समावेश है। इसमें जीवन शुद्धि के स्तर को सुधारने का मार्ग बताया है तथा प्रत्येक जीव पर आत्मीय भाव व 6 प्रकार के जीवों पर दया कर आचार की शुद्धि के तरीके का वर्णन किया है। इसमें कुल 20350 श्लोक हैं। इसमें मूल श्लोक, टीका चूर्णि, निर्युक्ति भी सम्मिलित है।

2. सूत्र कृतांग सूत्र का दूसरा नाम भी सूयगडांगसूत्र है। – इस सूत्र में दार्शनिक साधनात्मक बिन्दुओं को दर्शाया गया है। जिसमें जैन दर्शन सिद्धान्त की सामजिक स्थापना की और साधना मार्ग पर आने वाले कष्टों को दूर कर सहिष्णुता पर बल दिया है। धर्म चर्चा करते हुए दुराचार से सदाचार की ओर प्रेरित होने का उल्लेख तथा ज्ञान दर्शन चारित्र की पालना करने का विधान प्रतिपादित है। यह सूत्र भेद, अभेद को स्पष्ट करता है और इसको समझने के लिए भगवान महावीर के अनेकान्तवाद को समझना होगा। एकान्तवाद व अनेकान्तवाद का विरोध स्वतः स्पष्ट होता है। ऐसी स्थिति में यह सूत्र अनेकान्तवाद नयवाद अपेक्षाकृत या पृथकीकरण करके विभाजन कर किसी तत्व द्वारा सत्य के बारे में जानना भी ठीक रहता है। इस सिद्धान्त को बौद्ध ने विभाज्यवाद माना है ओर विभाज्यवाद कुछ मर्यादित क्षेत्र में ही प्रचलित था जबकि भगवान महावीर का अनेकान्तवाद का क्षेत्र व्यापक रहा है। जैसे जीव हे या अजीव है, सोना अच्छा है या जागना अच्छा है, जीव कितने प्रकार के है आदि इन सबका वर्णन है। तत्कालीन अन्य दार्शनिक विचारों का निराकरण करके स्वरूप प्ररूपणा का है भूतवादियों का निराकरण करके आत्मा का पृथक अस्तित्व बनाया है। इस सूत्र में दो श्रुतकन्ध और 23 अध्याय है। इसमें 180 क्रियाएँ 84 अक्रियावादी, 67 अज्ञानवादी आदि विषय वस्तु का वर्णन है। इसमें सभी मिलाकर कुल 41750 श्लोक है।

3. स्थानांग सूत्र – इस सूत्र को ठाणांग सूत्र भी कहा जाता है इस ग्रन्थ में सत्य की स्थापना की गई है तथा इस में आत्मा, पुद्गल ज्ञान, नय और प्रमाण आदि विषयों का उल्लेख है। इस ग्रन्थ का निर्माण वीर निर्वाण की छठीं शताब्दी माना गया है क्योंकि इसमें कुछ घटनाओं में छठीं शताब्दी का भी उल्लेख है। कुछ अंशो को छोड़कर सब प्राचीन है। सूत्र के चौथे अध्याय में चार प्रकार के सत्य की स्थापना की जिसमें प्रतिमा, देरासर (मंदिर) और पांचवे अध्याय में पांच प्रकार के संमकित पर बल दिया है और दसवें अध्याय में दस प्रकार के सत्य बताए है जो शरीर से संबंधित सत्य है और उसमें भी जिन प्रतिमा प्रमुख है। इस सूत्र में गणितानुयोग से लेकर चारो अनुयोगों का वर्णन है। इसमें संख्या 1 से 10 तक भिन्न–भिन्न पदार्थो का वर्गीकरण है, का वर्णन है। इसकी शैली विशिष्ठ है। इसमें सभी मिलाकर कुल 4250 श्लोक है।

4. समवायांग सूत्र – यह सूत्र आगम साहित्य का एक प्रमुख ग्रन्थ है। जैन धर्म के इतिहास के परिवेश में जिन सूत्रो एवं सन्दर्भो की उपयोगिता आज भी निर्विचार है यह एक समुद्र कोष है जिसमें कई वैज्ञानिक संभावना जन्म ले सकती है। इसमें वर्णित भौतिकी, जैविकी, भौगोलिकी की वैज्ञानिकता एवं उपयोगिता निर्विचार है जिसमें वर्तमान चौबीसी के तीर्थंकर, चक्रवती बलदेव, वासुदेव, प्रतिवासुदेव तरेसठ महापुरूषों का वर्णन है। इस में संख्या 2 से 100 तक व बाद में 150, 200, 300, 400, 500 व कोटि–कोटि संख्या तक कौन – कौन से पदार्थ है, उनका वर्णन है। इसमें कुल 5442 श्लोक है।

5. भगवती सूत्र – यह सूत्र आगम पाठ का मूल सूत्र है। इसको व्याख्या प्रज्ञप्ति सूत्र भी कहते है। यह दार्शनिक उपदेश का बहुत बड़ा सूत्र है। जिसमें मुख्य रूप से भगवान महावीर व उनके शिष्य श्री गौतम के बीच संवाद का वर्णन है। इसके अनेक प्रश्नोत्तर में नय प्रमाण आदि कई दार्शनिक विचार है। वैसे देखा जाए तो चारों अनुयोगों का विश्लेषण पृथक – पृथक सूत्रों में है लेकिन भगवती सूत्र में सभी का समावेश हो गया है। यह लिखना भी अनुपयुक्त न होगा कि यह सूत्र सभी दृष्टि से रत्नों का खजाना है। यदि किसी को जैन दर्शन के बारे में जानने की जिज्ञासा है तो इस सूत्र का अध्ययन से ज्ञात हो सकता है। इसमें कुल 57442 श्लोक है।

6. ज्ञातृ धर्मकथांग सूत्र – (ज्ञातासूत्र) इस सूत्र में किसी भी वस्तु विषय को समझने के लिए कुछ कथाएं देकर उपदेश दिया गया है।

जैसे – इस सूत्र के पांचवे अध्ययन में सेलकाचार्य 500 शिष्यों का पुण्डरिक पर्वत पर मोक्ष हुआ। इस पर्वत को पुण्डरिक पर्वत क्यों कहते हैं – ऋषभदेव भगवान के प्रथम शिष्य पुण्डरिक स्वंय का इस स्थान पर मोक्ष हुआ, उस समय से इस पर्वत को पुण्डरिक पर्वत कहा जाता है। इसी सूत्र में कहा है कि द्रोपदी ने श्री कपिल पुर में जिन मंदिर में जाकर पूजा की तथा श्री नेमिनाथ गिरनार पर मोक्ष गये यह सुनकर पांचो पाण्डवों का भी शत्रुंजय पर्वत पर मोक्ष हो गया। यह धर्मकथानुयोग से सम्बन्धित है तथा इसमें कुल 9200 श्लोक है।

7. उपासक दशांग सूत्र – इस सूत्र में जिन मार्ग अर्थात् धर्म मार्ग पर चलने वाले अनुयायियों के जीवन का वर्णन है। इसमें श्रावक के 12 व्रतों व 10 महा श्रावकों के जीवन परिचय का वर्णन है। इसके धर्म कथानुयोग के साथ चरण करणानुयोग सूत्र भी सम्मिलित है। इसमें कुल 1612 श्लोक है।

8. अतंकृत दशांग सूत्र – यह सूत्र भी धर्मकथानुयोग पर आधारित है। शत्रुंजय तीर्थ पर उपवास के साथ बैठकर आराधना करके मोक्ष को प्राप्त करना होता है जिसके लिये लोगो के चरित्र का वर्णन है। जैसे – गजसुकुमार राजा भरत चक्रवती ने शत्रुजंय तीर्थ का संघ व जिन मंदिरों के निर्माण का वर्णन है। इसमें केवली भगवंत का वर्णन है। द्वारिका नगरी का वर्णन का प्रारम्भ इसी सूत्र से हुआ। द्वारिका का नाश शत्रुंजय पर अधिकार जताना तथा श्रेणिक राज्य की 23 रानियों की तपस्या का वर्णन है। इसमें कुल 1250 श्लोक है।

9. अनुत्तरोप पातिकदशांग – यह सूत्र धर्म कथानुयोग का ही एक भाग है जिसमें जिन मार्ग के अनुयायियों का जीवन चरित्र का वर्णन है। इसके अन्त समय में चारित्र की भावना व आराधना करके अनुत्तरदेव बनकर दूसरे भव में पुनः चारित्र लेकर मोक्ष में जाने वाले 33 उत्तम आत्माओं का चरित्र वर्णन है। इसमें कुल 292 श्लोक है।

10. प्रश्न व्याकरणांग सूत्र – सूत्र में चरणकरणानुयोग के विषय में वर्णन है। जिसमें देवता विद्याधर, साधु साध्वी, श्रावक व श्राविका आदि ने प्रभु से प्रश्न किये उनका उत्तर प्रभु ने कैसे दिया, इसका विस्तृत वर्णन है। भाषा बोलते समय व्याकरण का पूर्ण ध्यान रखना होता है अन्यथा भाषावाद लगता है। मुनियों को चैत्य की अरिहन्त की प्रतिमा की भक्ति करना चाहियें। इसमें हिंसा, जुआ, चोरी, मैथुन व परिग्रह से पांचो महापाप को व इनको त्यागने के पांच महाव्रतो का वर्णन है। पूर्वकाल में मंत्र–तंत्र विद्या के तरीकों का वर्णन है। इसमें कुल 13400 श्लोक है।

11. विषाक सूत्र – इस सूत्र धर्म कथानुयोग का वर्णन है। जो धर्म कथाओं पर आधारित है।इसमें शुभ,अशुभ कार्यो की विशाक कथाओं द्वारा बोध कराया गया जिसमें 10 पापियों व 10 धर्मियों का उदाहरण देकर समझाया गया है। इसमें कुल 2150 श्लोक हैं।

उपांग (12) :–

1. औपपातिक सूत्र – इस सूत्र को उववाइय सूत्र भी कहा जाता है। यह आचारांग सूत्र का ही एक उपांग है। इसमें 12 तप व चम्पानगरी का वर्णन है तथा राजा कूणिक के जुलूस व अम्बडपरिव्राजक के 700 शिष्यों की बातों का वर्णन है।जैन आगम में जिनको कुणिक कहा जाता है उसको इतिहासकारों ने अजातशत्रु कहा है। राजा कुणिक ही श्रेणिक का पुत्र था जो भगवान महावीर का परम भक्त था।बौद्ध धर्म में बिंबसार कहा है और इतिहासकार बिंबसार को ही जानते हे।जैन शास्त्र में श्रेणिक को बिबंसार से जाना जाता है।इसमें 4292 श्लोक है।

2. राज प्रश्नीय सूत्र – यह सूत्र सूत्रकृतांग का ही उपांग है। इसमें परदेशी राजा का अधिकार सूर्याभिदेव के माध्यम से जिन प्रतिमा की पूजा भक्ति का वर्णन है। तथा जीव को बचाने के बारे में भी उल्लेख है। इसमें श्री पार्श्वनाथ भगवान के शिष्य श्री केशी श्रमण ने राजा परदेशी के प्रश्नों के उत्तर में नास्तिकवाद का निराकरण और उससे संबंधित अनेक तथ्यों को उदाहरण देकर समझाया।इसमें कुल 6770 श्लोक है।

3. जीवाभिगम सूत्र – यह स्थानांग सूत्र का उपांग है। इसमें जीव – अजीव, ढाई द्वीप, नरक देवविमान का वर्णन है तथा इसमे विजयदेव द्वारा जिन प्रतिमा को जल, चन्दन आदि से पूजा करने का वर्णन है। इसमें स्त्री को भी सिद्ध कहा है।इसके अलावा चतुर्मास में पर्यूषण पर्व, अट्ठाई महोत्सव करने की विधि का वर्णन है।इस सूत्र में 25192 श्लोक है।

4. प्रज्ञापना सूत्र – यह समवायांग सूत्र का उपांग है। प्रश्नोत्तर शैली में इस ग्रन्थ को लघु भगवती सूत्र भी कहते है। इसकी रचना आर्य श्याम (स्वयंसूरि) द्वारा की गई है। इनका दूसरा नाम कालकाचार्य (निगोद व्याख्याता) है। इनको वी. सं. 335 में युग प्रधान पद मिला था और इस पद पर सं. 376 तक रहे अतः इस सूत्र की रचनाकाल वि.स. पूर्व 134 से 94 के बीच की है। इस सूत्र में सत्यता के बारे में वर्णन है। इसमें स्त्री को सिद्ध माना है तथा सत्य भाषा बोलने का भी वर्णन है इसमें जीव के विविध भवों (कर्म, संयम) का विस्तार से उल्लेख है। इसमें कुल 26585 श्लोक है।

5. सूर्य प्रज्ञप्ति

6. जम्बूद्धीप प्रज्ञप्ति

7. चन्द्र प्रज्ञप्ति :– ये तीनो ही सूत्र में तत्कालीन भूगोल खगोल आदि मान्यताओं का वर्णन है। इन सूत्रो में गणितानुयोग का प्रयोग विशेष रूप से किया है। जिसमें सूर्य, चन्द्र, ऋतु, रात–दिन ग्रहो आदि का वर्णन है। जम्बूद्धीप में (जम्बूद्धीप नवनिधि, मेरू पर्वत पर तीर्थकंर का अभिषेक आदि) का विस्तृत वर्णन है। इसमे (सूर्य, चन्द्र प्रज्ञप्ति) 237 – 237 जम्बूद्धीप सूत्र में 4500 श्लोक है। तीनो सूत्रों में कुल 29242 श्लोक हैं।

8. निरयावली सूत्र – इस सूत्र में, युद्ध में हाथी व सेना हारने का कारण तथा नाना व दोहित्र के बीच जो भंयकर युद्ध हुए उसमें राजा श्रेणिक के 10 पुत्र व करोड़ो लोग मारे गये जो नरक में गये इसीलिए इस सूत्र को नरक आवली कहा जाने लगा, उनका विस्तृत वर्णन है।

9. कल्पावंतंतिका सूत्र – इस सूत्र में प्रधुनकुमार व श्रेणिक का काल के 10 पोत्रों का जीवन चरित्र का वर्णन है। इसमें कुल 15500 श्लोक है।

10. पुष्पिका सूत्र – यह प्रश्न व्याकरण सूत्र का उपांग है। इसमें चन्द्र, सूर्य, शुक्र, पूर्णभद्र, मणिभद्र, दत्त, शिव, बाल व अणाध्य इन नौ देवताओं ने भगवान महावीर की भक्ति के लिए 32 प्रकार के नाटक किये जिसका वर्णन है। इसमें कुल 10 अध्याय है।

11. पुष्प चूलिका सूत्र – यह विपाक सूत्र उपांग है। इसमें श्री देवी आदि 10 देवियों के पूर्व भवों का वर्णन है। इसमें कुल 10 अध्याय है।

12. वृष्णि दशा सूत्र – इस सूत्र में यादव वंश के राजा अंधक वृष्णि के समुद्रादि 10 पुत्र व दशवें पुत्र वासुदेव के पुत्र बलभद्र, निशाधकुमार आदि की 12 कथाओं का वर्णन है। इसमें कृष्ण महाराज नेमीनाथ भगवान को द्वारिका ले गये, उसका भी वर्णन है। इसमें कुल 15 अध्याय हैं।

छेद सूत्र (6) –

1 निशिथ सूत्र :– यह प्राचीन सूत्र आचारांग सूत्र की चूलिका है। इसमें जैन साधुओं के आचार सम्बन्धी तथा उत्सर्ग, आलोचना व अपवाद के रूप में वर्णन है।इसमें कुल 850 श्लोक है।

2 महानिशीध सूत्र :– इसमें नवकार की महिमा जिन मंदिर की जिन प्रतिमा की जल , चन्दन, पुष्प, द्रव्य पूजा के बारे में व अट्ठाई महोत्सव का वर्णन है। आत्मार्थ विचार व जीवों की रक्षा करने का वर्णन है। इस प्राचीन सूत्र को श्री हरिभद्र सूरि ने नष्ट होने से बचाया है।इसमें कुल 4548 श्लोक है।

3 व्यवहार सूत्र :–

4 दशाश्रृत स्कन्ध सूत्र :–

5 वृहत्कल्प सूत्र :– इन तीनों की रचना श्री भद्रबाहु स्वामी ने की है। इनका समय वि. सं. के 300 वर्ष पूर्व की होना चाहिये। इनमें साधुओं के आहार विहार आदि नियमों के उत्सर्ग अपवाद मार्ग की चर्चा दार्शनिक ढंग से की है तथा प्रंसग के अनुकूल ज्ञान प्रमाण निक्षेप के बारे में भी वर्णन है। इसमें दण्ड व्यवस्था, दोषों के निवारण करने की प्रक्रिया का भी वर्णन है। इन तीनो में कुल 91698 श्लोक है।

6 जीत कल्प सूत्र :– इस सूत्र की रचना आचार्य श्री जिनभद्र जी ने की है जब पंच कल्प नष्ट हो गया था तो जीतकल्प को छेद सूत्र में स्थान मिला, इसके बारे में यह कहा जा सकता है कि कल्प व्यवहार और निशिथ सूत्र का सार संग्रह है। इसमें 19 प्रकार का प्रायश्चित करने का विधान है।

संक्षेप में यह कहना है कि उपरोक्त सभी छेद सूत्रो में उत्सर्ग, अपवाद, आलोचना, प्राचीनता का विस्तृत वर्णन है। अति गंभीर केवल आत्मार्थ, भव भीरू धर्म दृष्टि से करने वाले कार्य छः कामों के जीवात्मा की रक्षा करने हेतु विचार करने का वर्णन है। इसमें 275 श्लोक है।

मूल सूत्र (4) :–

1. उत्तराध्ययन सूत्र – यह सूत्र उपदेशात्मक है। यह किसी एक आचार्य की कृति नहीं है और न ही एक समय की है फिर भी इसे विक्रम पूर्व दूसरी या तीसरी शताब्दी की मानने में किसी प्रकार की शंका नहीं है। इसमें भगवान महावीर के अंतिम काल के उपदेश सम्मिलित है वैराग्य व चारित्र की बातें एवं साधुओं के विचारों के बारे में विस्तृत वर्णन है। इसके 28 वें अध्याय में समकित के आठ आचार का भी वर्णन है। इसमें कुल 116708 श्लोक है।

2. दशवैकालिक सूत्र – इस सूत्र की रचना आचार्य श्री शयंम भवसूरि ने की है। इनको कालकाचार्य भी कहा जाता है। इसकी रचना काल विक्रम पूर्व 395 – 372 के बीच की है। यह सूत्र पंचम काल के साधु साध्वियों के लिए महान ग्रन्थ है। इसमें दस अध्याय है इसमें आचार्य शयंमभव सूरि के पौत्र श्री मनक मुनि की कम आयु जानकर पूर्वों में से 6 गाथाओं को उद्धृत करके 10 अध्ययन में समावेश किया तथा अन्त की दो चूलिकाएँ महत्वपूर्ण है। जिसमें स्थूलभद्र स्वामी की बहन यक्षा साध्वी जी महाविदेह क्षेत्र में से सीमन्धर स्वामी से चार चूलिका लाई थी उसमें से दो का वर्णन है। इसमें 32148 श्लोक है।

3. आवश्यक सूत्र – यह सूत्र बाह्य अंग होने से गणधर द्वारा रचित नहीं हो सकता संभवतयाः इसके समकालीन ही हो। इसको भी प्राचीन सूत्र कहा जा सकता है क्योंकि साधुओं के पठन की बात आती है तो सर्व प्रथम इसी सूत्र का अध्ययन कराया जाता हैं अतः इसकी रचना विक्रम पूर्व 470 वर्ष हो चुकी थी ऐसा अनुमान किया जाता है। प्रत्येक साधु, साध्वी व श्रावक, श्राविका को प्रतिदिन प्रातः आवश्यक रूप से इस सूत्र में बताए मार्ग पर चलना चाहिये जैसे – सामयिक, वंदन, प्रतिक्रमण कार्योत्सर्ग व पच्चकखाण आदि। इसमें कुल 237143 श्लोक है।

4. पिण्ड निर्युक्ति सूत्र – यह सूत्र दशवैकालिक सूत्र की निर्युक्ति का ही अंग है अतः इसकी रचना भद्रबाहु (द्वितीय) द्वारा की गई है। यह रचना पांचवी – छठीं शताब्दी की होनी चाहिये। इस सूत्र में आहार प्राप्ति के तरीकों वर्णन है। इसमें 45 दोष कैसे दूर हो, आहार करने से 6 कारण और न करने पर 6 कारण आहर आदि विषयों का वर्णन है।

प्रकीर्णक (10) :–

1. चतु:शरण– इस सूत्र में अरिहन्त, सिद्ध, साधु और गच्छधर्म के आचार के स्वरूप का वर्णन है और चारो शरण का वर्णन है और चारो शरण की स्वीकृती है।इसमें कुल 880 श्लोक है।

2. आतुरप्रत्याख्यान सूत्र – इस सूत्र अंतिम आराधना व मृत्यु सुधार का विस्तृत वर्णन है। इसमें 63 गाथाएँ है, इसमें कुल 500 श्लोक है व 84 गाथाएँ है।

3. भक्त परिज्ञा सूत्र :– इस सूत्र में मृत्यु के तीन प्रकार (1) भक्त परिज्ञा मरण (2) इंगिणी मरण (3) पादोपगमन मरण का वर्णन है। इसमें यह भी वर्णन है कि श्रावक को संघ भक्ति, मंदिर, प्रतिमा प्रतिष्ठा, तीर्थ यात्रा में अपना व्यय पर शुभ फल मिलता है व आहार त्याग कर मरण की तैयारी का वर्णन है। इसमें कुल 175 गाथाए है।

4. संस्तारक सूत्र – इसके नाम से ही स्पष्ट है कि संथारा की महिमा का वर्णन है तथा अंतिम समय में क्षमा की आदर्श विधि का वर्णन है। इसमें 155 गाथाएँ है।

5. तदुल वैचारिक सूत्र – इस सूत्र में जीवात्मा 100 वर्षो में कितना खान–पान करे तथा धर्म की आराधना से ही मन की सफलता है और अच्छे भाव से की गई आराधना से ही शुभ फल प्राप्त होते है।इसमें 400 गाथाएँ हैं।

6. चन्द्रवेध्यक सूत्र – इससे मृत्यु सुधारने के लिए किस प्रकार की आराधना करनी चाहिये, इसका विस्तृत वर्णन है। इसमें कुल 310 गाथाएँ व 200 श्लोक हैं।

7. देवेन्द्रस्तव सूत्र – इसमें 32 इन्द्र द्वारा प्रभु की स्तुति एवं इन्द्र संबंधित सभी बातो का वर्णन है।इसमें कुल 500 गाथाए व 375 श्लोक है।

8. गणिविद्या सूत्र – इसमें ज्योतिष सम्बन्धी दिन, तिथि, ग्रह, मुहूर्त, शकुन, लग्न आदि का वर्णन है। बडे ग्रन्थो का सांराश है। इसमें कुल 100 गाथाएँ हैं।

9. महा प्रत्त्याख्यान सूत्र – इसमें साधु के अंतिम समय में किए जाने योग्य कार्य, विविध क्रिया आत्महितकारी उपयोगी बातों का वर्णन है। इसमें कुल 134 गाथाएँ व 176 श्लोक है।

10. वीर स्तव – इसमें मृत्यु संम्बधित आठ प्रकरणों के सार व अंतिम आराधना का विस्तृत वर्णन है। इसमें कुल 8300 श्लोक व 720 गाथा हैं। ये दसों ही प्रकीर्णक दिगम्बर समाज, स्थानकवासी सम्प्रदाय में नहीं है यहाँ तक प्राचीन ग्रन्थ इसिभासियाइ सूत्ताइं (ऋषिभाषित सूत्र) में भी उल्लेख नहीं है। इससे यह मानना चाहिये कि अंतिम रूप से पूर्वाचार्यो ने अपनी – अपनी दृष्टि से इनका प्रतिपादन किया। गीतार्थ, हितार्थ व परम्परागत साधु के सदाचारी सर्व जीवों के हित के लिये चिन्तन करने वाले साधु के आचार विचार का भी वर्णन है।

चूलिकाएँ (2) :–

1 नन्दीसूत्र :– इस सूत्र की रचना श्री देववाचक ने की। इसकी रचना काल विक्रम की छठीं शताब्दी के पूर्व होना चाहिये। यह सूत्र जैन दृष्टि से ज्ञान के स्वरूप और उसके भेदो के विश्लेषण की एक सुन्दर व श्रेष्टतम् रचना है। जिसमें भगवान महावीर की स्तुति, संघ की कई उपमाओं सहित 24 तीर्थकर, 11 गणधर, स्थविराली और 5 ज्ञान का विस्तृत वर्णन हैं इसमे 16477 श्लोक है।

अनुयोगद्वार सूत्र :– इस सूत्र की रचनाकाल क्या है, यह जानना कठिन है लेकिन ऐसा प्रतीत होता है कि उसकी रचना आवश्यक सूत्र के बाद की है क्योंकि उसमें उसी सूत्र का अनुयोग किया गया है। अतः संभव है कि आर्य रक्षित सूरि के बाद बना हो या उनके द्वारा ही बना हो इस आधार पर इसकी रचना विक्रम पूर्व तो अवश्य हुई है तथा समय–समय पर आवश्यक परिवर्तन भी हुए है। इस सूत्र में निश्चय एवं व्यवहार द्वारा आराधना के मार्ग पर चलने का उपदेश है अनुयोग अर्थात् शास्त्र की व्याख्या के चार द्वार बताए है जैसे – उक्रम निक्षेप अनुगम व नय और नय के साथ प्रमाण का भी वर्णन है। यह आगम सब आगमों की चाबी है यह भी कहना उपर्युक्त होगा कि सर्वप्रथम इसको पढ़कर ही आगे बढ़ना चाहिये। इसमें 13165 श्लोक है।

उक्त प्रकार से विवेचन करे तो ऐसा प्रतीत होता है कि श्री भगवान महावीर के शिष्य श्री सुधर्मा स्वामी ने द्वादशांगो की रचना की और इनमें से 11 अंग उपलब्ध है और 12 वा अंग दृष्टिवाद लुप्त (नष्ट) हो गया। इन 11 ही अंगो को मूर्तिपूजक, स्थानकवासी, दिगम्बर सम्प्रदाय मानते है। ब्राह्मय अंगों में अन्तर है। मूर्तिपूजक के अंग, उपांग आदि (45) का वर्णन है। दिगम्बर में अंग व बाह्मय अंग (34) स्थानकवासी अंग व बाह्मय अंग कुल (32) जैन दर्शन के विकास के युग को चार भागों में विभक्त किया जा सकता है। (1) आगम युग (2) अनेकान्त स्थापनयुग (3) प्रमाण शास्त्र व्यवस्था युग (4) नवीन युग।

आगम युग भगवान महावीर – के निर्वाण से 1000 वर्ष तक का है। (वि.पू. 470– वि. 500) दूसरा युग वि. पांचवी से आठवी शताब्दी तक तीसरा युग आठवीं से 17वी शताब्दी तक चौथा युग सतरहवीं से अब तक इनके विकास के क्रम का भविष्य में देखा जाएगा।

आगम साहित्य का इतना विस्तृत वर्णन है कि उसको कुछ पृष्ठों में नहीं लिखा जा सकता। मैं सभी जैन धर्म भाईयों से कहना चाहता हूँ कि आगम के बारे में जैन दर्शन के कुछ बिन्दुओं की जानकारी मिल सके, देने का प्रयास किया है। यह अंतिम नहीं है, प्रत्येक आगम का विस्तृत अध्ययन, भाषा, भाष्य, काल आदि के बारे में शोध की आवश्यकता है, विस्तृत शोध होने पर कई नवीन बिन्दुओं का निरूपण हो सकेगा।

जैन दर्शन का अनेकान्तवाद, स्यादवाद, अर्हम दर्शन आदि नामों से जाना जाता है और उक्त सभी आगमों का चार विभाग में विभाजन किया जा सकता है वे है चार निम्न अनुयोग –

1 द्रव्यानुयोग	2 धर्मानुयोग
3 गणितानुयोग	4 चरणकरणानुयोग

इन चारों अनुयोगों की आवश्यकता प्राणियों के कल्याणार्थ तीर्थंकरों ने की व कही।

(1) द्रव्यानुयोग – द्रव्य की व्याख्या जैन शास्त्र में 6 (षड्) द्रव्य के नाम से जाना जाता है।

1. जीवास्तिकाय 2. धर्मास्तिकाय 3. अधर्मास्तिकाय
4. आकाशस्तिकाय 5. पुद्लास्तिकाय 6. काल

1 – जीवास्तिकाय का लक्षण यह कि कर्मों को करने वाला कर्मों का फल भोगनेवाला, किये गये कार्य के शुभ–अशुभ गति में जाने वाला और सम्यग्ज्ञानादि के वश कर्म समूह को नाश करने वाला आत्मा जीव है।

2– धर्मास्तिकाय अरूपी पदार्थ है जो जीव और पुद्ल दोनों की गति में सहायक है।

(अ) जीव और पुद्ल में चलने वालो की साम्मर्थ है।

(ब) लेकिन धर्मास्तिकाय की सहायता के बिना नहीं हो सकते जैसे मछली चलने में समर्थ है लेकिन बिना जल के नहीं।

(स) स्कन्ध – एक समूह तक के पदार्थ को कहते है देश – नाम, भाग को कहते है। प्रदेश – वह जिसे पुनः विभाग न हो सके।

3– अधर्मस्तिकाय – एक अरूपी पदार्थ है जो जीव और पुद्‌ल को स्थिर रहने के लिए सहायक है यदि पदार्थ न हो तो जीव और पुद्‌गल दोनो क्षणभर भी स्थिर नहीं रह सकते। धर्मास्तिकाय व अधर्मस्तिकाय केवल लोक में ही है। अलोक में आकाश के अतिरिक्त और कोई पदार्थ नहीं होता अतः मोक्ष की स्थिति लोक के अन्त में होती है क्योंकि उपरोक्त दोनो पदार्थ लोक के आगे नहीं है।

4– आकाशस्तिकाय भी एक अरूपी पदार्थ है जो जीव व पुद्‌गल को स्थान देते है और यह लोक व अलोक दोनो में होता है।

5– पुद्‌लस्तिकाय संसार के सभी रूपवान जड़ पदार्थ को कहते है इसके स्कन्ध, देश, प्रदेश व परमाणु के चार भेद है जो निर्विभाग भाग में मिल रहे है उसे प्रदेश कहते है और वही यदि अलग ही हो तो परमाणु के नाम से जाने जाते है।

6– कालद्रव्य – जहाँ सूर्य चन्द्र दिन चल स्वभाव वाले है वही काल (समय) व्यवहार है। काल को दो भागों में बाटा गया है।

(1) उत्सर्पिणी (2) अवसर्पिणी

उत्सर्पिणी वह है जिसमें रूप, गंध, स्पर्श इन चारों की क्रम से वृद्धि होती है और अवसर्पिणी वह जो उपरोक्त पदार्थ का क्रम से नाश होता है।

दोनो के छः –छः विभाग है जिनको आरा कहते है। अतः एक कालचक्र में उत्सर्पिणी के 6 आरे और अवसर्पिणी के 6 आरे होते है।

इन दोनो में चौबीस तीर्थकंर होते है, इनके मुक्त जीव फिर उलट कर किसी उत्सर्पिणी या अवसर्पिणी में नहीं आते। जहाँ सूर्य, चन्द्र, तारे आदि निश्चित है वहाँ काल का व्यवहार नही है

2. चरणानुयोग – जिसमें चारित्र धर्म की व्याख्या अति सूक्ष्म तरीके से की गई है जिस प्रकार के धर्म प्रकरण की गई है जिसको विस्तृत आचारांग व सूत्रकृत्रांग सूत्र में किया गया है।

3. गणितानुयोग का अर्थ गणित की व्याख्या है जो लोक में असंख्य द्वीप और समुद्र है, उनके तरीके व उसे प्रमाण आदि का भली प्रकार वर्णन है। इसमें सूर्य प्रज्ञप्ति, चन्द्र प्रज्ञप्ति लोक प्रकाश, त्रेलोक्य दीपिका ग्रंथो का अध्ययन करना चाहिये।

4. धर्मकथानुयोग – में भूतपूर्व महापुरूषों के चरित्र है जिनको मनन करने से जीव उच्च श्रेणी में पहुँच सकते हैं।

जैन साहित्य के विषय में पश्चिमी विद्धान जोन्स हरटेल –Dr. Johannes Hertel Doeble German Empire ने लिखा है कि जैन साहित्य बुद्ध साहित्य में काफी समानता है लेकिन मैंने पाया है कि जैन साहित्य अधिक अच्छा है। उपरोक्त चारों अनुयोगों में सम्पूर्ण जैन धर्म का तत्व परिपूर्ण है।

भारत की प्राचीन जैन गुफाऐं

जैन धर्म भारतवर्ष का अति प्राचीन धर्म है, जैन साधुओं को श्रमण कहा जाता है। ऋग्वैदिक काल में जैन श्रमणों को बातरसना मुनि कहा जाता था। उत्तर वैदिक काल के मुनि यति और व्रात्य श्रमण परम्परा के बने जैन ग्रन्थों में तिरेसठ महान् पुरूषों का उल्लेख मिलता है जिसमें 24 तीर्थंकर सर्वाधिक पूजनीय माने जाते हैं इसमें प्रथम तीर्थंकर ऋषभनाथ है और इसका उल्लेख ऋग्वेद में भी हुआ है। ब्राह्मण परम्परा के भागवत पुराण में उनकी गणना विष्णु के 24 अवतारों में की गई।

दूसरे तीर्थंकर अजितनाथ से बीसवें मुनिसुव्रत तक उन्नीस तीर्थंकर बिल्कुल पौराणिक पुरूष प्रतीत होते है, लेकिन उनकी ऐतिहासिकता अभी तक सिद्ध नहीं हो सकी है। लेकिन वैदिक धर्म में इन सभी का नाम प्रत्यक्ष – अप्रत्यक्ष, अच्छे–बुरे के लिये आता है। इक्कीसवें तीर्थकर नमिनाथ मिथिलानरेश जनक के पूर्वज थे। बाइसवें तीर्थंकंर नेमिनाथ श्री कृष्ण के चचेरे भाई थे। तेइसवें तीर्थकंर पार्श्वनाथ एक ऐतिहासिक पुरूष थे। वाराणसी के राजा अश्वमेघ (पिता) व माता वामा देवी थी, उनका जन्म स्थान वाराणसी के पास भोलुपुर नाम स्थान है। इनका जन्म ईसा पूर्व 780 में हुआ था। बौद्ध धर्म के ग्रन्थ के अंगुत्तर निकाय में पार्श्वनाथ के अनुयायियों का उल्लेख है।

चौबीसवें तीर्थंकंर महावीर के ईसा पूर्व 6ठीं शताब्दी में कुण्डग्राम (वैशाली जिला) में जन्म हुआ। उनके पिता कुण्डपुर के राजा सिद्धार्थ थे व माता त्रिशला थी जो लिच्छवि वंश के राजा चेटक की पुत्री थी (एक अन्य परम्परा के अनुसार चेटक की बहन थी।)

महावीर के माता पिता पार्श्वनाथ भगवान के अनुयायी थे। महावीर के बाद जैन संघ का नेतृत्व क्रमशः गौतम, सुधर्मा स्वामी व जम्बू स्वामी रहे। इन तीनों के समय में जैन संघ में कोई मतभेद न था लेकिन उसे बाद संघ दो भागों में विभक्त हो गया। (1) अल्पवस्त्र धारण करने वाले मुनि (श्वेताम्बर) (2) निर्वस्त्र रहने वाले मुनि (दिगम्बर)। इसी समय वे जिन प्रतिमाओं में भी सचेल व निचेल का विभेद किया गया।

महावीर के समय मगध के राजा बिंबसार जैन धर्म का अनुयायी था और चौथी शताब्दी (ईसा पूर्व में) मगध जैन धर्म का केन्द्र बना रहा। उसी समय वहाँ के किसी नंद राजा ने कंलिग (उड़ीसा) से एक प्रतिमा उठा ले आया जिसे कलिंग का राजा खारवेल (ईसा पूर्व पहली शताब्दी में) वापस ले आया।

सिकन्दर के आक्रमण के बाद चन्द्रगुप्त मौर्य ने एक विशाल राज्य स्थापित किया और चन्द्रगुप्त के अंतिम दिनों में आचार्य भद्रबाहु स्वामी के प्रभाव से जैन धर्म अंगीकार किया। चन्द्रगुप्त मौर्य के पौत्र अशोक एक महान् सम्राट थे जिन्होंने कलिंग युद्ध किया और उसमें काफी नरसंहार हुआ उसके बाद युद्ध को परित्याग कर शेष जीवन धर्म प्रचार में व्यतीत करने लगे। वे बौद्ध धर्म के पोषक थे और उनका पौत्र सम्प्रति जैन धर्म का पोषक बना और उनका जैन धर्म में ऊतना ही स्थान रहा जितना बौद्ध धर्म में सम्राट अशोक का।

मौर्यकाल के बाद बौद्ध कला व जैन वास्तु एवं शिल्प की काफी उन्नति हुई। महाराजा खारवेल व सम्प्रति काल के कई स्तूप व गुफाएं आज भी विद्यमान है। जैन एवं बौद्धों के अतिरिक्त हिन्दुओं ने गुफाएं बनवाई। इतिहास के झरोखें को देखें तो ज्ञात हुआ कि जैन धर्म के सभी सम्प्रदाय में चन्द्रगुप्त मौर्य व सम्प्रति महाराजा का इतिहास भरा गया लेकिन महाराजा खारवेल जो जैन अनुयायी थे, प्रचारक थे, इनके शासनकाल में जैन धर्म की उन्नति हुई, उनके बारे में कुछ नहीं लिखा। महाराजा खारवेल का जन्म 297 ईस्वी पूर्व में हुआ।

इनके पिता का नाम बुद्धराज तथा पितामह खेमराज थे। इनका 74 वर्ष की आयु में राज्याभिषेक हुआ और 13 वर्ष तक राज्य किया। इस समयावधि में इन्होंने सम्राट की उपाधि प्राप्त की। अन्त में समाधि मरण द्वारा शरीर त्याग किया। ऐसा शिलालेख कलिंग देश (वर्तमान में उड़ीसा) के कुमार पर्वत (खण्डगिरी) की हस्ति गुफा से प्राप्त हुआ। यह शिलालेख 15' लम्बा 5' चौड़ा है। 17 पंक्तियां है, पाली भाषा के समान है। इस लेख को पढ़ने व अध्ययन करने के कई प्रयत्न किये और एक सौ वर्ष बाद इसको पढ़ने का श्रेय पुरातत्ववेत्ता श्री सुखलाल को मिला। इसका प्रारम्भ इस प्रकार किया है।

नमो अरहंताणं नमो सव सिद्धाणं आगे महाराजेन महामेधवाहने ने कलिंगाधिपतिका सिद्धिखारवेलेन..... इस प्रकार शिला लेखों से ही धर्म की प्राचीनता प्रगट होती है।

इन सब में से सबसे अधिक कुषाण को सफलता मिली और उन्होनें उनके समय में भारतीय संस्कृति को प्रोत्साहन दिया। इसी समय गुजरात के जूनागढ़ में एक जैन गुफा को खोदा गया। गुप्तकालीन गुफा में आवासीय गुफा न होकर पूजा गृह थी, कई मूर्तिया मिली। जैन गुफा – उदयगिरी (विदिसा जिला म.प्र.) पहाड़ी को काटकर गुफा बनी हुई – कई गुफा में बरामदा है/ कुछ में नहीं है। इनमें से कुछ का वर्णन इस प्रकार है :–

राजगिरी की जैन गुफा –

राजगिरी (नालन्दा, बिहार) मगध जनपद की राजधानी रही। यहाँ पर बीसवें तीर्थकंर श्री मुनिसुव्रत भगवान के चार कल्याणक हुए। यहाँ की गुफाऐं मौर्यकालीन और नागार्जुन की गुफाओं से मिलती है।

1. बड़ी गुफा का आकार 34' x 17' x 11½' है।

2. दूसरी गुफा उपरोक्त गुफा से तीस फीट दूर है जो उसी शैली की है। इसका आकार 12' x 17' का है। छत टूट चुकी है। यहाँ पर ईसा की चौथी शताब्दी का एक शिलालेख है आचार्य मुनि बैरदेव ने प्रतिष्ठा कराई। प्रतिमा नही है।

पमोसा की गुफा –

पमोसा ग्राम इलाहाबाद से 50 किलोमीटर दक्षिण–पश्चिम दिशा की ओर पहाड़ी पर स्थित है। इसमें एक गुफा 9' x 7½' ग 3¼' है। यहाँ पर श्रमणों के लिए आसन 9' x 1.75' x 1.25' का बना है। इसका द्वार छोटा है। इसमें बैठकर जाना पड़ता है यह गुफा अहिच्छय के आषाढसेन ने कश्यपीय अर्हन्तों के लिए बनवाने का अभिलेख है। यह शैली प्रथम शताब्दी ईसा पूर्व की प्रतीत होती है।

उड़ीसा की गुफा –

ये गुफा भुवनेश्वर (उड़ीसा) से उत्तर पश्चिम की ओर उदयगिरी व खण्डगिरी की दो पहाड़िया है जिनके बीच में एक पहाड़ी मार्ग है। इनमें 18 उदयगिरी में व 15 खण्डगिरी में कुल 33 गुफाएँ है। ये गुफाएँ राजा खारवेल व उनके परिजनों ने जैन श्रमणों के रहने के लिए व तपस्या करने के लिए बनवाई है। इसमें पूजा घर एक भी नहीं है। यह गुफाएं पहाड़ी की ऊँचाई के अनुसार बनाई गई है। जो प्रथक–प्रथक नाम से जानी जाती है।

उड़ीसा की गुफा –

ये गुफा भुवनेश्वर (उड़ीसा) से उत्तर पश्चिम की ओर उदयगिरी व खण्डगिरी की दो पहाड़िया है जिनके बीच में एक पहाड़ी मार्ग है। इनमें 18 उदयगिरी में व 15 खण्डगिरी में कुल 33 गुफाएँ है। ये गुफाएँ राजा खारवेल व उनके परिजनों ने जैन श्रमणों के रहने के लिए व तपस्या करने के लिए बनवाई है। इसमें पूजा घर एक भी नहीं है। यह गुफाएं पहाड़ी की ऊँचाई के अनुसार बनाई गई है।जो प्रथक–प्रथक नाम से जानी जाती है।

जूनागढ़ की गुफाएं –

गुजरात के जूनागढ़ के पास गिरनार पर्वत है वहाँ पर 12–13वीं शताब्दी (ईसवी.) में स्थापित मंदिर के यहॉ पर कोई गुफा नही खोदी गई लेकिन उसके बाद में खोदी गई है।एक अन्य पहाड़ी बाणा प्यारामठ के पास कुछ गुफाएँ है जो जैन की है।

1 राजुल की गुफा भी स्थापित है।

उदयगिरी (मध्यप्रदेश) की गुफाएं – मध्यप्रदेश के विदिशा जिला में उदयगिरी की पहाड़ी पर कुल 20 जैन गुफाएं है।जिनमें से नम्बर 20की गुफा जैन है।पत्थर को ही खोद कर बनाई है ।यह इस गिरी की सबसे बड़ी गुफा है जो 50' लम्बी व 16' चौडी है। इसमें श्री पार्श्वनाथ भगवान की एक मूर्ती भी है जो से. 106 का लेख भी है।

महाराष्ट्र की गुफाएं –

इस प्रदेश में सबसे अधिक गुफाएँ हैं इनमें से अधिकतर बौद्ध व हिन्दु धर्म से सम्बन्धित है लेकिन जैनियों की भी कई गुफाएं है।जिनमें से एलोरा, अंकाई की प्रमुख है।

इसी प्रकार से तमिलनाडू, कर्नाटक, केरल, ग्वालियर, आबू पर्वत (राजस्थान) ईडर (गुजरात) में भी गुफाएं स्थापित है।

जिनमें से मुख्य मुख्य गुफाओं के चित्र इस प्रकार है :–